ryasamaj.org

Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-39 अंक-16
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 08 जुलाई से 14 जुलाई 2015 तक
द्वि.आषाढ़ कृ० सप्तमी से द्वि.आषाढ़ कृ० त्रयोदशी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

हिन्दुत्व का अभिन्न.. पृष्ठ- 3

खीरा खाओ और वजन.. पृष्ठ- 4

महान प्राणी गाय की.. पृष्ठ- 5

ENOUGH IS ENOUGH.. पृष्ठ- 9

तार-तार होते वादे.. पृष्ठ- 12

- न्दू होने की मिलती है सजा
- वंशवादी दरबार में हिन्दू-विरोधी विदूषक या भगवा आतंकवाद का शिगूफा छोड़ने में सिद्हस्त!
- पीडीपी की हरकतें सहयोगी दल के लिए घातक
- सत्ता के दलाल और भारतीय राजनीति
- कांग्रेस को अब याद आये अम्बेडकर
- अंतर्राष्ट्रीय संतुलन की कसौटी पर योग

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत ने कायम किये दो विश्व रिकार्ड, योग के विरोध के लिये मुस्लिम धर्मगुरुओं की निन्दा

• संवाददाता •

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत में शानदार आयोजनों को लेकर पूरे विश्व में वाहवाही हो रही है। इतना ही नहीं सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसी दिन भारत ने दो विश्व रिकॉर्ड बना गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज करा लिया है। पहला रिकॉर्ड एक जगह पर सबसे अधिक लोगों के योग करने का बना, तो दूसरा एक साथ सबसे अधिक देशों के लोगों के शेष पृष्ठ 11 पर

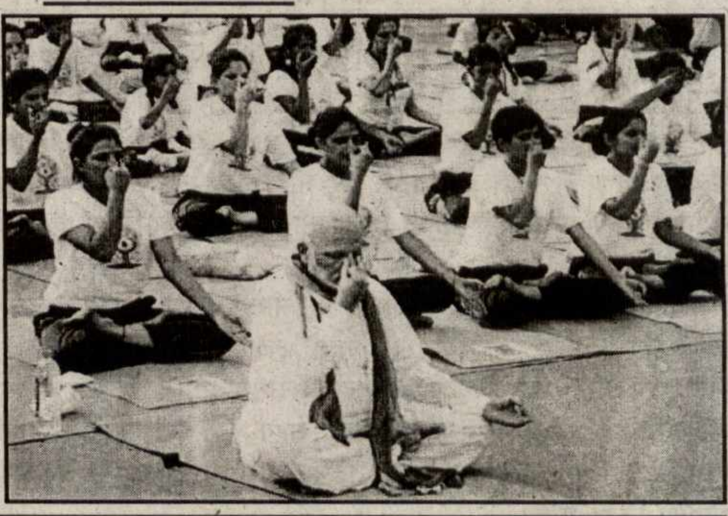

भारतीय सीमा में नेपाल की ओर से आये प्लेन, १२ चक्कर लगा वापस लौटे, हिन्दू महासभा ने जांच की मांग की

• संवाददाता •

मोतिहारी सीमावर्ती घोड़ासहन के इलाके में एक–एक कर चार हवाई जहाज आये और आसमान में चक्कर लगाने लगे। नेपाल की ओर से बारी–बारी से तीय सीमा में आये प्लेन लगातार चक्कर लगा रहे थे। स्थानीय लोगों के मुताबिक प्लेनों ने १२ चक्कर लगाये और इसके बाद नेपाल की ओर ही वापस लौट गये। इस संबंध में जब घोड़ासहन के थानाध्यक्ष से पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि हमने एसएसबी को सूचना दे दी है। इधर आसमान में हवाई जहाज के चक्कर लगाने से इलाके के लोग दहशत में आ गये। इन लोगों को लग रहा था कि कोई अनहोनी होनेवाली है। लोग आपस में इस बात की चर्चा कर रहे थे कि लगता है कि हवाई जहाज रास्ता भटक कर भारतीय सीमा में आ गये हैं और इनका ईंधन खत्म होगा, तो ये इलाके में कहीं भी गिर जायेंगे। जिससे जान–माल की क्षति हो सकती है। लेकिन इसी बीच रात को एक–एक कर सभी हवाई वापस नेपाल की ओर चले गये। तब इलाके के लोगों ने राहत की सांस ली, लेकिन दूसरी आशंका पैदा हो गयी, इन्हें लगता था कि हवाई जहाज इलाके की जासूसी करने के लिए तो नहीं आये थे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री·वीरेश त्यागी ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से इस मुद्दे की जांच करवाने व दोषियों पर कार्यवाही करने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि भारतीय सीमा में घुसकर हवाई जहाजों ने भारत की संप्रभुता का उल्लंघन किया है।

Thearyasamaj.org

पर्यटन और आस्था का प्रतीक सिद्धि विनायक मंदिर

कोई भी शुभ काम शुरू करने से पहले भगवान गणेश की पूजा जरूरी की जाती है। इस तरह की स्थिति को हम 'श्रीगणेश' के नाम से भी जानते हैं। मुंबई के प्रभादेवी में स्थित श्री सिद्धि विनायक मंदिर देश में स्थित सबसे पूजनीय मंदिरों में से एक है। यह मंदिर भगवान गणेश को समर्पित है। भक्त जब भी किसी नए काम की शुरुआत करता है तो इस मंदिर के दर्शन जरूर करता है। हर साल यहां लाखों श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं और भगवान गणेश की पूजा करते हैं।

पौराणिक कथा - मान्यता है कि जब सृष्टि की रचना करते समय भगवान विष्णु को नींद आ गई, तब भगवान विष्णु के कानों से दो दैत्य

मधु व कैटभ बाहर आ गए। ये दोनों दैत्य बाहर आते ही उत्पात मचाने लगे और देवताओं को परेशान करने लगे। दैत्यों के आतंक से मुक्ति पाने हेतु देवताओं ने श्रीविष्णु की शरण ली। तब विष्णु शयन से जागे और दैत्यों को मारने की कोशिश की लेकिन वह इस कार्य में असफल रहे। तब भगवान विष्णु ने श्री गणेश का आह्वान किया, जिससे गणेश जी प्रसन्न हुए और दैत्यों का संहार हुआ। इस कार्य के उपरांत भगवान विष्णु ने पर्वत के शिखर पर मंदिर का निर्माण किया तथा भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित की। तभी से यह स्थल सिद्धटेक नाम से जाना जाता है।

सिद्धिविनायक मंदिर का इतिहास – मुंबई स्थित सिद्धिविनायक मंदिर का निर्माण १६ नवंबर, १८०१ को लक्ष्मण विट्ठू और देउबाई पाटिल ने किया था। निर्माण के बाद भी समय–समय पर इस मंदिर को एक नया रूप दिया गया। महाराष्ट्र सरकार ने इस मंदिर के भव्य निर्माण के लिए जमीन प्रदान की जिस पर पांच मंजिला मंदिर का निर्माण किया गया।

सिद्धिविनायक मंदिर - सिद्धिविनायक मंदिर के अंदर एक छोटे मंडपम में भगवान गणेश के सिद्धिविनायक रूप की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गई है। मंदिर में लकड़ी के दरवाजों पर अष्टविनायक को प्रतिबिंबित किंया गया है। जबकि मंदिर के अंदर की छतें सोने के लेप से सुसज्जित की गई हैं। सिद्धिविनायक मंदिर की गिनती अमीर मंदिरों में की जाती है। इस मंदिर से करोड़ों रुपए की आय होती है।

सिद्धिविनायक मंदिर का महत्व - सिद्धिविनायक मंदिर उन गणेश मंदिरों में से एक है, जहां केवल हिन्दू ही नहीं, बल्कि हर धर्म और जाति के लोग दर्शन और पूजा–अर्चना के लिए आते हैं। कहते हैं कि सिद्धि विनायक की महिमा अपरंपार है, वे भक्तों की मनोकामना को तुरंत पूरा करते हैं। मान्यता है कि ऐसे गणपति बहुत ही जल्दी प्रसन्न होते हैं और उतनी ही जल्दी कुपित भी होते हैं।

सिद्धिविनायक मंदिर भगवान गणेश के लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। यहां पूरे साल भक्तों की भीड़ उमड़ती है। देश–विदेश से श्रद्धालु और पर्यटक भगवान गणेश के दर्शन के लिए यहां आते हैं। वैसे अगर आप भी सिद्धिविनायक मंदिर जा रहे हैं तो आप महालक्ष्मी मंदिर, चौपाटी और जूहू बीच, गेटवे ऑफ इंडिया, हाजी अली, माउंट मेरी चर्च जाना न भूलें। यह सारे लोकप्रिय स्थल सिद्धिविनायक मंदिर से कुछ ही किलोमीटर के अंदर स्थित हैं। ट्रेन और वायु मार्ग से आप आसानी से मुंबई पहुंचकर न केवल सिद्धिविनायक मंदिर के दर्शन कर पाएंगे बल्कि अन्य उपरोक्त पर्यटक स्थल से रूबरू हो पाएंगे।

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह खासकर घर के व्यवहारिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। ऑफिस में वैकल्पिक व्यवस्था बनायें रखने की आवश्यकता है। कार्यों में सफलता की वजह से मन प्रसन्न रहेगा। कुछ लोगों का खोया हुआ अधिकार पुनः मिल जाने की सम्भावना है। दूसरों के झगड़ों को अपने सिर पर लेने का प्रयास न करें। जटिल कामों में रिस्क लिया जा सकता है।

वृष - इस सप्ताह आपके प्रयास खाली नहीं जायेंगे। कई तरह के रूके हुये कार्य सम्पन्न होंगे। विरोधी आपके सामने समझौते का प्रस्ताव रखेंगे, जिस पर अमल करना हितकर रहेगा। आर्थिक लेन–देन से बचने की आवश्यकता है। परिवार में अहं के कारण टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

मिथुन - जिम्मेदारियों का भार बढ़ेगा ऐसी स्थिति में स्वविवेक से निर्णय लेने होंगे। दहलीज पर आते–२ सफलता रह जायेगी। ऑफिस के कार्यों में स्वयं को बाध्य महसूस करेंगे। न्यायिक मामलों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। पड़ोसियों के गिले–शिकवे दूर होंगे।

कर्क - इस सप्ताह आप लक्ष्य को भेदने के लिए अधीर रहेंगे। विरोधियों का मन आपकी ओर से हटेगा। अपने कार्यों को करने के लिए सतत् संघर्ष करना पड़ेगा। पुराने साथियों से आप सहयोग की आशा कर सकते हैं।

सिंह - इस सप्ताह आप–अपने ही कार्य से सन्तुष्ट नहीं होंगे। अपना आत्म विश्लेषण करते रहने से मन में आशावादी विचार आयेंगे। सही वार्तालाप एवं व्यवहार में सन्तुलन के कारण आपकी प्रशंसा होगी। अति भावुकता की वजह से ठगे जा सकते हैं।

कन्या - इस सप्ताह कुछ नयें ढंग से कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। त्रुटियॉ निराशा की ओर ले जायेंगी किन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है। हर रात्रि के बाद एक बेहतर सुबह भी आती है। अधूरे कामों की पुनः समीक्षा करने की जरूरत नजर आ रही है।

तुला - इस सप्ताह आप आलोचना को नजरअंदाज करेंगे तो आप विपरीति परिस्थितियों में भी मजबूत होकर निकलेंगे। अपने कार्यों को करने में अति जल्दबाजी हानि पहुंचा सकती है। आपके इर्द–गिर्द लोग चक्कर लगायेंगे क्योंकि आप उपयोगी नजर आ रहे हैं।

वृश्चिक - इस सप्ताह बाधाकारी चीजों से मुक्ति मिलेगी। परम्पराओं के विरूद्ध जाने का मतलब है कि आप–अपनों से दूर हो जायेंगे। ईमानदारी व निष्पक्ष तरीके से काम करने का हौसला बना रहेगा जिससे मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी।

धनु - इस सप्ताह आप–अपने कार्यो को सफलतापूर्वक करेंगे तथा दूसरों की सहायता करने में पीछे नहीं हटेंगे। गुप्त शत्रुओं से सतर्क व सावधान रहने की आवश्यकता है। नयें मित्र बनेंगे किन्तु सुरक्षा के दृष्टि से स्वयं को आत्म–विश्वास से लबरेज रखना होगा।

मकर - इस सप्ताह समंस्याओं का त्वरित निदान ढूँढने के चक्कर में आप उलझे रह सकते हैं। आवश्यकता से अधिक काम करने से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। कार्य में बिलम्ब होने से मन उदास रहेगा। दूसरों के कार्यों को करने में असहज महसूस करेंगे।

कुम्भ - नयीं योजनाओं का शुभारम्भ एक दीर्घकालीन निवेश है, जिसके दूरगामी परिणाम सार्थक सिद्ध होंगे। मानसिक संवेग से अस्थिरता बढ़ेगी। ऑफिस की गतिविधियों में आपकी सक्रिय भूमिका से लोग डरे व सहमें नजर आयेंगे।

मीन - इस सप्ताह आप भावावेश में आकर कामे करेंगे तो ठगे जा सकते हैं। रूढ़िवादिता के शिकार हो सकते हैं। नियमों की अनदेखी आपको मुसीबत में डाल सकती है। पूर्व की कटुता मन पर हावी रहेगी। तमाम बाधाओं के बाद लक्ष्य प्राप्त होंगे। नयें लोगों से दीर्घकालिक मित्रता करना बहुत लाभदायक नहीं रहेगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

अव्यक्तादीनि भूतानि वयक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना।।

हे अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पहले अप्रकट थे और मरने के बाद भी अप्रकट हो जाने वाले हैं, केवल बीच में ही प्रकट हैं; फिर ऐसी स्थिति में क्या शोक करना है?।।२८।।

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः श्रृणोति श्रुत्वाप्येन वेद न चैव कश्चित्।।

कोई एक महापुरुष ही इस आत्मा को आश्चर्य की भाँति देखता है और वैसे ही दूसरा कोई महापुरुष ही इसके तत्त्व का आश्चर्य की भाँति वर्णन करता है तथा दूसरा कोई अधिकारी पुरुष ही इसे आश्चर्य की भाँति सुनता है और कोई–कोई तो सुनकर भी इसको नहीं जानता।।२६।।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि।।

हे अर्जुन! यह आत्मा सबके शरीरों में सदा ही अवध्य है। इस कारण सम्पूर्ण प्राणियों के लिये तू शोक करने के योग्य नहीं है।।३०।।

j.org

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता

दिनांक 08 जुलाई से 14 जुलाई 2015 तक

अध्यक्षीय

हिंदुत्व का अभिन्न अंग है योग

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

२१ जून को पहला विश्व योग दिवस मनाया गया। इसे लेकर जहां केंद्र सरकार अति उत्साहित रही, वहीं तमाम विपक्षी पार्टियां इसके विरोध में लगी थीं। आम जनमानस को यह देख कर क्रोध और आश्चर्य दोनों हुआ। एक ओर योग दिवस का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में १९३ सदस्य देशों में से १७७ देशों के समर्थन से पारित हुआ, वहीं अपने ही देश में विपक्षी दल विरोध कर रहे हैं। कई राजनीतिक और धर्म के ठेकेदारों ने यह मान लिया है कि हिन्दू संस्कृति का विरोध करना ही उनका मकसद बन चुका है। उनको यह नहीं दिख रहा है कि इस कार्यक्रम से पूरे विश्व में भारत की साख बनी है। संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रयासों से वैश्विक रूप से योग दिवस को यह मान्यता मिली है। योग हमारी पुसतन विरासत है। हमारे मनीषियों ने तन–मन, चित्त–वृत्ति, स्वास्थ्य–सोच को विकार मुक्त बनाने के लिए इस विधा को हजारों साल पहले ईजाद किया। योग में भारत विश्व गुरू बना। हींग लगे न फिटकरी रंग निकले चोखा जैसी कहावत को चरितार्थ करने वाले योग का सहज मर्म पश्चिमी देशों ने सीखा और उदार भाव से इसे अपनाया। आज एक बार फिर पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के साथ योग के जरिए लोगों के स्वास्थ्य को बरकरार रखने की मुहिम छेड़ी जा चुकी है। जिस हमारे ज्ञान को अपनी बेहतरी के लिए बहुत से देशों ने अंगीकार किया, उसी कला को करने या न करने को लेकर यहां विवाद खड़ा कर दिया गया। विवाद खड़ा करने की वजह भले ही राजनीतिक और सामाजिक हो, लेकिन ऐसे लोगों को उन ४६ मुस्लिम देशों से सबक सीखना चहिए, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में भारत के योग दिवस के प्रस्ताव पर सहमति दी। इसमें ईरान, अफगानिस्तान जैसे तमाम कट्टर मजहबी देश हैं जो शायद अपने धर्म के नियमों को मानने के प्रति कहीं ज्यादा सख्त हैं। हालांकि राजनीतिक–सामाजिक हितों को पूरा करने वाले इस विवाद को किनारे रख दिया जाए तो योग एक ऐसी दिव्य औषधि है जिसका इस्तेमाल करके कोई भी अपने अंतस में उजियारा भर सकता है। जिस तरह से सूर्य अपनी रोशनी प्रदान करने में किसी तरीके का भेद नहीं करता उसी तरीके से योग करके कोई भी उसका सार्थक लाभ ले सकता है। यह धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय, ऊंच–नीच, छोटे–बड़े और अमीर–गरीब से परे हैं। किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करता है। दुनिया के हर इंसान को यह समभाव से लाभकारी भारतीय विधा है। ऐसे में हमें हमारी इस प्राचीन विशिष्ट विधा को विवादों से परे रखते हुए इसकी महत्ता को जानना और समझना चाहिए। खुशी और सम्मान के साथ इसे अपनाना चाहिए। योग करना अच्छा है। कुछ लोगों का कहना है कि इसे अनिवार्य बनाने के पक्ष में नहीं हैं। इसके विपरीत बेहतर यह होगा कि लोगों के बीच योग को लेकर जागरूकता फैलाई जाए जिससे लोग सेहतमंद जीवनशैली के तौर पर इसे अपना सकें। यदि इसे अनिवार्य बनाया जाता हैं तो यह गलत होगा। क्योंकि थोपना हमेशा गलत रहा है। जबकि कुछ ने माना है कि योग से रोग का नाश होता है। यही वजह है कि हर धर्म के व्यक्ति को अच्छे स्वास्थ्य के लिए योग अपनाना चाहिए। हिन्दुत्व और योग एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। हिन्दू महासभा ऐसे किसी भी प्रयास का कड़ा विरोध करती है जिसमें योग को हिन्दुत्व से अलग बताया जा रहा है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

हिन्दू होने की मिलती है सजा

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

देश में कई बार सत्ता बदली। लोगों ने दावे किये, लेकिन कश्मीरी पंडितों के आंसुओं को कोई भी पोंछ नहीं सका। मोदी की सरकार के समय लगा था कि शायद इनके दिन फिर जाएंगे। लेकिन अब उन्हें विश्वास हो चुका है कि वह लगातार अपने हिन्दू होने के गर्व को दबा कर, अपने को छिप छिपाकर जीना ही उनकी जिंदगी है। वहां के सरकारी कार्यालयों में जानबूझकर हिन्दू कर्मचारियों के आगे हिन्दू देवी देवताओं को अपशब्द कहे जाते हैं। वहां के हिंदुओं को हिंदू होने की सजा दी जाती है। कश्मीरी पंडितों का कहन्ना होता है कि हम कोशिश करते हैं, न सुनें। पर कब तक। वह कश्मीर में गिलानी की देशद्रोही हरकतों की आलोचना नहीं कर सकते। सन २००५ में कहा गया था कि कश्मीरी पंडितों को वापस भेजा जायेगा। कहा गया था कि छह हजार कश्मीरी पंडितों को घाटी में नौकरी दी जायेगी, ताकि वे वापस बस सकें। आज तक दस सालों में सिर्फ १५६२ कश्मीरियों को नौकरी मिली। वह भी केंद्र के कोटे से। राज्य सरकार ने अपनी तरफ से ३००० लोगों को नौकरी देनी थी। उसमें से एक को भी नौकरी नहीं दी गयी। कहा गया कि राज्य के पास पैसा ही कहां है। जहां हैं भी, वहां चारों तरफ कुछ ऐसी आबादी का स्वरूप छा गया है कि २०० के बीच अकेला कश्मीरी पंडित का घर कैसे आबाद होगा। दुनिया में इतने निर्मम, बर्बर, अमानुषिक लोग और कहां होंगे। जैसे हम हैं। एक पूरी आबादी जड़ से उखाड़ दी। गीत खत्म कर दिये। संगीत अनाथ कर दिया। रोने और गम मनाने की रीति बिखर गई। हजारों सालों का चला आ रहा इतिहास मिट्टी से उखाड़ कर किताबों में बंद कर दिया। इतना अपमान किया, मारा, नफरत की इंतिहा कर दी। कश्मीर से ज्यों–ज्यों सुगंध गई, ज्यों देश का हिस्सा गया, ज्यों खुशनुमा खुलापन, तंगदिली, तंग–नजरों से हलाक हुआ। उसी तरह ये कशमीरी पंडित उजड़े। भारतीय गणतंत्र कितना ही देशभक्ति के गीत गा ले, कितना ही ऊंची उड़ाने भर ले, कितनी ही समृद्धि और सुरक्षा के नये मापदंड रच ले, लेकिन स्वतंत्र देश में बने देशभक्त शरणार्थी हमेशा चुभन देते रहेंगे। इन भारतीय नागरिकों का एकमात्र अपराध उनका देशभक्त होना, उनका हिंदू होना ही रहा। वे किसी कारण जौहर की फिल्म का विषय नहीं बनेंगे। क्योंकि उनको एक हीरो के अमेरिका में सुरक्षा जांच के घेरे से निकलते हुए झेले गए अपमान की वेदना जितनी तीव्रता से महसूस होती है। वहीं सरकारी स्कूल में पढ़ाने वाली एक शिक्षिका का कहना है कि उनकी सहेलियों के साथ भी इसी तरह की घटनाएं हुई हैं जिससे उन्हें दुख होता है। उन्होंने बताया कि वहां छोटे–छोटे बच्चे इस्लाम कुबुल करने की बात करते हैं। उनसे भी एक सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक छात्र से मुलाकात हुई तो उसने बताया कि वह डॉक्टर बनना चाहती हैं, वो कहती हैं कि स्कूल में उनके साथी मुसलमान साथी कहते हैं कि हिंदुस्तान चोर है। छोटे–छोटे बच्चे इस्लाम कुबूल करने की सलाह देते हैं। वह कहते हैं कि आप इस्लाम कुबूल कर लो और आपके धर्म में कुछ नहीं है। इन्हीं चीजों से ऊब चुके अधिकतर कश्मीरी पंडित या तो अपना घर बार छोड़ चुके हैं, या छोड़ रहे हैं। बच्चों के साथ हुई ऐसी घटनाएं कश्मीरी पंडितों की सोच पर भारी प्रभाव डालती हैं। वो चाहते हैं कि उनके बच्चे हिंदू ग्रंथों को जानें, पढ़ें और समझें। लेकिन उनको जब विशेष दिनों में स्कूल में इस्लामी प्रार्थना होती है तो उन्हें भी सभा का हिस्सा बनना पड़ता है। स्थानीय लोगों की माने तो ये पंडितों के ऊपर है कि वो घाटी में वापस आना चाहते हैं या नहीं।अधिकतर कहते हैं कि पंडितों की आज की पीढ़ी जो दो दशकों तक घाटी से बाहर रही वह खुद भी वापस नहीं आना चाहती क्योंकि वो कश्मीर को जानते ही नहीं। पीड़ितों का कहना होता है कि हम अपनी शिकायतें किसके पास ले जाएं। वो बच्चों के डर, शिकायत को घाटी को कट्टर इस्लामी रंग दिए जाने की कोशिश के तौर पर देखते हैं। ऐसी घटनाएं क्या इक्का–दुक्का हैं या फिर कितनी फैली हैं, यह कहना संभव नहीं लेकिन कश्मीरी पंडितों का आरोप है कि घाटी में खुले नए स्कूलों में बढ़ते इस्लामीकरण में खुद के लिए जगह नहीं ढूंढ पा रहे हैं।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

सबको होता है पीठ का दर्द, लेकिन बेवजह नही

ज्यादातर चिकित्सा विशेषज्ञों की यही राय है कि इस बीमारी के प्रति जागरूक रहना ही इसका सबसे अच्छा इलाज है। ७५ से ८० प्रतिशत लोग इस बीमारी से पीड़ित होते हैं लेकिन इसे साधारण समझकर इलाज के लिए किसी चिकित्सक का सहारा न लेकर स्वयं ही इसका इलाज करते रहते हैं और जब वे पूरी तरह से इस रोग की गिरफ्त में आ जाते हैं। तब भागदौड़ शुरू करते हैं।

वास्तव में शरीर के इस दर्द की वजह रीढ़ की हड्डी व उससे जुड़ी मासंपेशियां हैं जिनमें गलत ढंग से बैठने, खड़े होने ओर लेटने के समय आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ने से दर्द होने लगता है। प्रायः बच्चे पेट के बल लेटकर पढ़ाई करते हैं या टीवी देखते हैं। जब वह स्कूल में बैंच पर बैठकर काम करते हैं तो गर्दन सिर व कमर को आगे की तरफ झुका लेते हैं। इस मुद्रा में बैठकर काम करने से पीठ दर्द की संभावनाएं काफी बढ़ जाती हैं। सच तो यह है कि हम अपनी दिनचर्या के दौरान कमर का बहुत ज्यादा दुरूपयोग करते हैं। हम में से ज्यादातर लोग, विशेषकर घरेलू औरतें कोई भी व्यायाम नहीं करतीं। अक्सर घंटों तक बिस्तर प्रर पड़े रहना या गलत मुद्रा में बैठना, उठना और सोना कमर दर्द का कारण बनता है। पीठ दर्द के कारणों का पता लगाने के लिए हमें पीठ की रचना के बारे में जानना होगा। रीढ़ की हड्डी ३३ हड्डियों को एक के ऊपर एक रख कर मिलने से बनी है। प्रत्येक हड्डी के बीच में एक डिस्क होती है। शरीर के ऊपरी हिस्से का सारा वजन रीढ़ की हड्डी को ही सहन करना पड़ता है जिस के कारण पीठ दर्द की परेशानी हो जाती है।

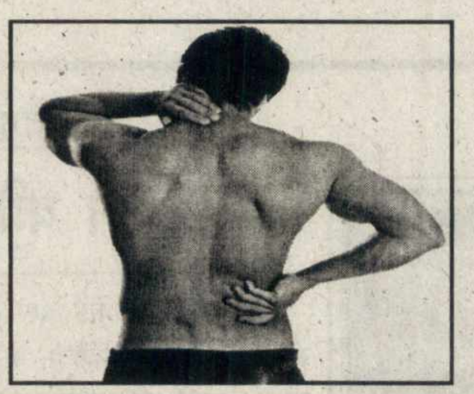

भले ही आष कितने भी मजबूत क्यों न हों, यदि आप जरूरत से अधिक मेहनत करेंगे तो आप की पीठ इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी। थके होने पर भी लगातार काम करते रहना पीठ दर्द को बुलावा देना है। गलत तरीके से व्यायाम करना भी पीठ दर्द का एक कारण बन सकता है। उम्र बढ़ने के साथ–साथ शरीर का भी क्षय होने लगता है और रीढ़ की हड्डी को होने वाला नुकसान इस बात पर निर्भर करता है कि युवावस्था में रीढ़ पर कितना दबाव पड़ा है।

आमतौर पर ४० वर्ष की आयु के बाद रीढ़ की हड्डियों का क्षरण शुरू हो जाता है। हड्डियों में कैल्शियम और अन्य खनिज पदार्थों की कमी से मांसपेशियाँ कमजोर हो जाती हैं। रीढ़ की हड्डी चोट, दबाव भी किसी भी प्रकार के विकार के कारण तनावग्रस्त होती है तो उसमें तकलीफ होती है। जो लोग स्लिप डिस्क कोई भारी चीज उठाने, खेल या किसी क्रिया के दौरान शरीर के गलत ढंग से खिंचने या किसी प्रकार के अचानक दबाव के कारण होता है) के शिकार होते हैं उन्हें पीठ दर्द होना आम बात है। इसके अलावा पोषक तत्वों की कमी, लंबी बीमारी आदि कुछ कारणों से भी पीठ का दर्द होता है।

शरीर में पोषक तत्वों की कमी के कारण रक्त संचालन की प्रक्रिया में गड़बड़ होने से रीढ़ की मांसपेशियों पर अधिक दबाव पड़ता है जिससे पीठ दर्द होता है। अधिक भागदौड़ व परिश्रम करने वाले लोग जो काम से साथ–साथ आराम नहीं करते वे भी पीठ दर्द से पीड़ित रहते हैं। ज्यादा मोटे लोग भी प्रायः पीठ के दर्द से परेशान रहते हैं। ऐसे लोग जो अक्सर नरम बिस्तर पर लेटते रहते हैं, पीठ दर्द की चपेट में आ जाते हैं, क्योंकि बिस्तर पर लेटने के कारण मांसपेशियां आराम करने लगती हैं और हड्डियों को सहारा न मिलने के कारण पीठ में दर्द होने लगता है।

खीरा खाओ और वजन घटाओ

पानी का स्रोत माना जाने वाला खीरा अधिकतर कई लोगों को अच्छा नहीं लगता है। पर क्या आपको पता है कि इसको कई बॉलीवुड स्टार अपने आपको स्लिम–ट्रिम बनाएं रखने के लिए खाते हैं। अगर आप जानना चाहते हैं कि खीरा खा कर वजन कैसे कम होता है तो हमारा यह लेख जरूर पढ़ें–

फायदे : खीरे में ६५ प्रतिशत पानी और ५ प्रतिशत फाइबर पाया जाता है। इसलिए यह शरीर में पानी की कमी को पूरा करने के साथ ही पाचन क्रिया को भी सही रखता है तथा नमक को भी बैलेंस करता है। साथ ही खीरे से शरीर में ठंडक रहती है और यह आंखों तथा त्वचा को भी साफ करता है।

डाइट : अगर आपको खीरे को अपनी डाइट में शामिल करना है तो इसका सलाद तैयार करें जिसमें २ खीरे काटें और उसमें नमक, ऑलिव आयल तथा कुछ पत्तेदार सब्जियां भी मिला लें। इस तरह खाने से आपका फेट कम होगा और पेट भर जाएगा। कुछ हर्ब जैसे धनिया में विटामिन ए और आयरन, कॉपर और मैग्नीशियम जैसे मिनरल पाए जाते हैं। इसलिए इनको अपने सलाद में जरूर शामिल करें, जिससे आपकी बॉडी को पोषण मिल सके।

ब्रेकफास्ट में खाएं : गेहूं की ब्रैड और जैम, एक कटोरा खीरे का सलाद, एक कप गरम चाय लंच, दाल, रोटी, सब्जी और खीरे का सलाद।

डिनर : डिनर में आपको केवल सलाद ही खाना चाहिये। अगर आप खीरे से तैयार सलाद बना कर खाएंगे तो ३ दिन में लगभग २ किलो वजन तो कम ही हो जाएगा। इसके अलावा यह हमारी त्वचा का भी खास ख्याल रखता हैं।

होंठों की त्वचा चेहरे के अन्य हिस्सों की अपेक्षा काफी संवेदनशील होती है इसलिए फेशियल स्क्रब करना कभी–कभी समस्याजनक हो जाता है। होंठों की मृत त्वचा को हटाने के लिए हफ्ते में एक बार कॉटन बॉल को गुनगुने पानी में भिगोकर होंठों पर कुछ देर रखें, जिससे होंठों की पपड़ी मुलायम हो जाए। उसके बाद किसी मुलायम और सूखे टूथब्रश को हल्के हाथों से होंठों पर रगड़ें ताकि मृत त्वचा आसानी से निकल जाए।

इसके अलावा रात में सोने से पहले होंठों पर पेट्रोलिम जेली लगाकर कुछ देर हल्का मसाज करें। फिर उसे ऐसे ही छोड़ दें। दूसरे

होंठो को चाहिए सही देखभाल

दिन सुबह चेहरा ठंडे पानी से साफ करके गुलाब की तीन–चार ताजा पंखुड़ियों को हथेलियों पर रगड़कर उसके रस को होंठों पर लगाएं। सूखने पर साफ पानी से धो लें।

आवश्यक है अतिरिक्त देखभाल : सर्दियों में होंठों को विशेष देखभाल की जरूरत होती है। सौंदर्य विशेषज्ञा मीनाक्षी दत्ता बताती हैं कि शुष्क और सर्द हवाओं के कारण रूखेपन का सामना सिर्फ आपके होंठों को ही नहीं करना पड़ता, बल्कि रैंप पर कैटवॉक करती खूबसूरत मॉडल्स भी इस समस्या का सामना करती हैं। इसीलिए मेकअप आर्टिस्ट मॉडल्स के रूखे होंठों का उपचार कुछ इस तरह करते हैं। एक टूथब्रश पर थोड़ा –सा लिप क्रीम लगाकर होंठों पर हल्के हाथों से मलते हैं। उसके बाद होंठों पर एलिजाबेथ अर्डन की ऐट ऑवर क्रीम लगाकर जज्ब होने के लिए १५ मिनट के लिए छोड़ देते हैं। उसके बाद मेकअप करते हैं।

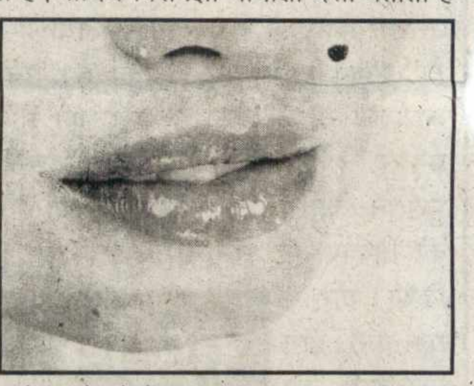

नमी बनाए रखें : लिपिस्टक लगाने से पहले होंठों पर खूब सारा लिप बाम लगाएं, फिर अतिरिक्त बाम को पोंछकर या सुखाकर लिपस्टिक लगाएं। फ्लेवर्ड लिप बाम से बचें। जो बाम आपको सूट करता हो या आप जिसे ज्यादातर इस्तेमाल करती हों, उसका ही प्रयोग करें। फटे होंठों के लिए कोईएंटी बैक्टीरियल ऑइंटमेंट इस्तेमाल करें, ताकि संक्रमण न होने पाएं। इसके अलावा पपीते को मैश करके एक चम्मच रस निकालकर होंठों पर रुई की सहायता से लगाएं। १०–१५ मिनट बाद होंठों को साफ पानी से धोकर लिप बाम लगा लें। पपीते में एक्सफोलिएट तत्व होते हैं, जो होंठों की मृत त्वचा को हटाकर उन्हें नर्म, मुलायम और चिकना बनाते हैं।

नर्म होंठों के लिए : फटे होंठों को छिपाने के लिए लिपिस्टक का सहारा न लें, बल्कि उनका उपचार करें। इसके लिए शहद, नींबू का रस, ऑलिव ऑयल और ग्लिसरीन को बराबर–बराबर मात्रा में मिलाकर फटे होंठों पर लगाएं। या फिर एक स्ट्रोबेरी को मैश करके उसमें एक चम्मच मिलक क्रीम और शहद मिलकार होंठों पर १०–१५ मिनट तक लगाएं। धोकर सुखा लें और लिप बाम लगाएं।

राजगुरु की कुण्डलियाँ

वाह रे ! समाज

दाम लेय तन बेचती, कहें पॉर्न स्टार।
सनीलियोन समाज को, सेलिब्रिटी स्वीकार।।
सेलिब्रिटी स्वीकार, किन्तु ऐसा हो जाये।
कोई लड़की अगर, हवश की बलि चढ़ जाये।।
उससे जी–भर घृणा, यह करे समाज तमाम।
''राजगुरु'' समाज की, हो गई अकल बेदाम।।

फूट और एकता

नेतागण की वजह से, बढ़े फूट का रोग।
आतंकिनं की वजह से, होंय एकजुट लोग।।
होंय एकजुट लोग, बात लगती है अटपट।
बात सही सौ टका, कराते नेता खटपट।।
खौफनाक कंपकंपी, जोड़कर रखती क्षण–क्षण।
सार–तत्व ''राजगुरु'', फुटौवल जड़ नेतागण।।

yasamaj.org

समष्टि-प्रकृति की पोषक महान प्राणी गाय की दुर्दशा क्यों? वर्तमान दशा और समाधानपरक दिशा।

भारतीय गोवंश की रक्षा तथ गोसेवा विशुद्ध अध्यात्मिक, धार्मिक एवं मानवीय प्रश्न है। मानव को सम्पूर्ण आरोग्य पवित्र व मांगलिक समृद्धि तथा समाधानपरक समझ देने में एकमात्र गाय ही सक्षम है। गोकेन्द्रित समाज एवं व्यवस्थाओं को शासन नीति में स्थापित करवाना है अत्यावश्यक।

-पूना राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''

भारतवर्ष में धार्मिक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सामाजिक और व्यवहारिक दृष्टि में पूज्या गोमाता तथा उसके अखिल गोवंश को उनके द्वारा समष्टि प्रकृति के पोषण एवं समग्र मानवकल्याणार्थ पंचगव्य की अवभुत–अनुभव महता, उपादेयता और आवश्यकता के कारण सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। गोवंश भारतीय जीवन शैली का प्राण है। सात्विक्र आहार, सद्चिन्तन, सद्भाव एवं सत्संग का स्त्रोत गोवंश ही हैं मानव जाति एवं सम्पूर्ण जीव–जन्तु चराचर जगत के हित गोवंश के हित में समाहित है। मानव जाति को सम्पूर्ण आरोग्य, पवित्र में मांगलिक समृद्धि तथा समाधानपरक समझ गोवंश द्वारा ही प्राप्त होती हैं। स्पष्ट है कि भारतवर्ष के लिए गोवंश अत्यन्त महत्वपूर्ण अमूल्य एवं अक्षय निधी है।

सभी वैदिक ग्रन्थों में उल्लेखित है कि **''गोवो विश्वस्य मातरः''** अर्थातगाय विश्व की माता है और **'गोस्तु माता व विद्यते''** अर्थात गाय के समान इस भूमण्डल में दूसरा कोई नहीं है। भारतीय गोवंश की रक्षा तथा गोसेवा विशुद्ध धार्मिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रश्न है। गाय की उपस्थिति एवं उनका पंचगव्य मानव के ािव, मन और शरीर की पूर्ण स्वस्थत तथा समष्टि प्रकृति के पंचभूतों अग्नि, वायु, जल पृथ्वी और आकाश की सात्विक पुष्टि व सन्तुलन के लिए अमोघ है।

बहुतायात भारतीय समाज के भावपूर्ण संकल्प को पूरा करते हुए भारतीय शासन नीति में गोरक्षा–गोसेवा की महता स्थापना के रूप में अविलम्ब देश में पूर्ण **''गोहत्या प्रतिबन्ध''** लगाकर गोमाता को **''राष्ट्र माता''** घोषितकरना अति आवश्यक है। तभी देश के आस्तिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं परमार्थ पथ के पथिक राष्ट्रभक्त तत्वों का सम्पूर्ण गोसंरक्षण, प्रत्यक्ष गोपालन प्रभावी व प्रमाणिक गौसंवर्धन समग्र व वृहद पंचगव्य वरिकरण न विनियोग की दिश ने संकल्प पूरा होना तथा मानव मात्र के जीवन में पंचगव्य उपयोग की सहज सुलभता सम्भव हो सकेगी।

'यह मांग धार्मिक न होकर पूर्णतया व्यवहारिक है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी तर्कसंगत तथ्यात्मक एवं प्रमाणिक है। गाय को मात्र हिन्दुओं से जोड़कर देखने के कारण ही पिछले ६६ वर्षो में कोई भी राजनीतिक दल **''गोहत्या प्रतिबन्ध''** की दिशा में पूरजोर प्रयास नहीं कर पाया है। जबकि सत्य में देश का कोइ वर्ग धर्म सम्प्रदाय या पंथ गाय के विरूद्ध नहीं है। प्रत्येक भारतीय नागरिक तथा सभी राजनैतिक दलों के नेताओं के ह्दय में सजग व सक्षम शासकीय गुणो से युक्त गोसेवाभाव व गोभक्ति स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं

भारत में कुछ अपवादों

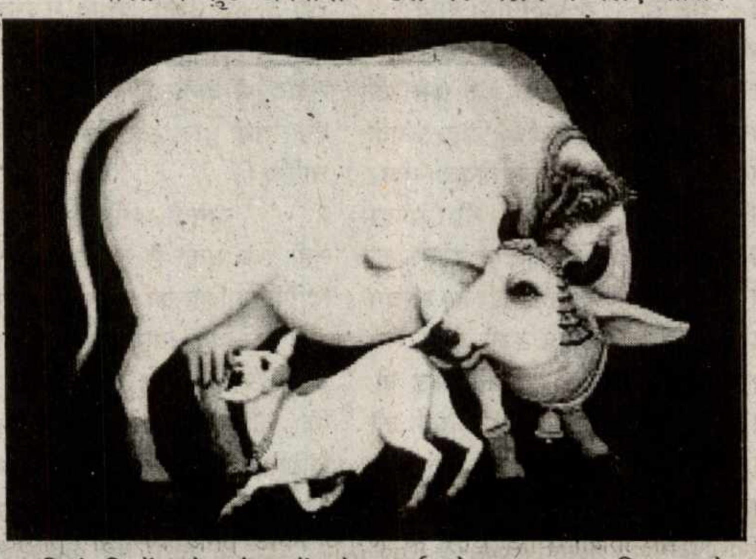

व विसंगतियों को छोड़ दें तो मुगलकाल तक गाय को **''मां''** का दर्जा सुरक्षित रहा। अंग्रेजों ने शासकीय नीति युक्त गोहत्या प्रारम्भ की सर्वविदित है कि अंग्रेजों को भगनो के आन्दोलन की मुख्य शक्ति एवं सफलता भी जनमानस की **'गोहत्या'** रोकने की प्रतिबद्धता ही रही थी तथा महात्मा गांधी के लिए आजादी का प्रथम अर्थ ही पूर्ण **''गोहत्या प्रतिबन्ध''** था। आजादी पश्चात १९६६ में कृपात्रजी महाराज के आन्दोलन के बाद गाय को **''राष्ट्र माता''** घोषित करवाने सहित समग्र गोकेन्द्रि समाज शासकीय नीति एवं गौआधारित व्यवस्थाओं की स्थापना हेतु सन १९६३ से विश्व ख्यिात गोसंरक्षण केन्द्र श्रीपथमेडा गोधाम महातीर्थ के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक गोत्रऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज द्वारा विभिन्न प्रयास पूरी शक्ति से प्रारम्भ हुए। फलतः आज देश में गाय के विषय पर सुपरिणामकारी अनुकुलताएं बढ़ने लगी हैं स्वयं लेखक को भी अनवरत गोत्रऋषि स्वामीजी के पावन सानिध्य में सततः समय एवं सम्पूर्ण प्रयासरत रहते इसी महान कार्य में जीवन लगाने का सौभग्य प्राप्त है।

यहां ज्वलन्त प्रश्न है कि समाज द्वारा जिस शासन व्यवस्था से गाय को ''राष्ट्र माता'' का दर्जा दिलवाने का प्रयास हो रहा है। उसी शासन की नीतियों के अर्न्तगत देश में प्रतिदिन लाखों गायें कत्लखानों में काटी जा रही है। अतः स्पष्ट है कि तब तक गोमाता को वैदिक काल का सम्मान दिलवा पाना असंभव है जब तक कि गोकेन्द्रित–गोआधारित नीति–रीति युक्त व्यवस्थाओं के निर्माण तथा उस पर चलने के लिए शासक वर्ग को मजबूर कर दिया जाये।

गोवश के मानव जाति पर उपकारों एवं सम्पूर्ण आरोग्य हेतु उनके द्वारा पंच महाभैतिक पर्यावरण शुद्धता के महान संदर्भो का ध्यान में रखकर उपरोक्त महान सुउद्देश्यों की प्राप्ति हेतु बिन्दुवार तथ्यात्मक न्यायोचित तर्कसंगत अनुभव के साथ व्यवहारपरक किए जा सकने वाली कार्य योजनाओं को शासन द्वारा निम्नानुसार लागू किया जाना अत्यावश्यक है।

१. **केन्द्र** तथा सभी राज्यों **के शासन–प्रशासन** द्वारा प्रत्येक ग्राम, ग्राम पंचायत, पंचायत समिति तथा नगरपालिका क्षेत्र के स्थानीय निराश्रित उपेक्षित, असहाय गोवंश को पूर्व में संचालित क्षेत्रीय गोशालाओं में तथा नव गोसेवा सदनों की स्थापना करके प्रवेश दिलाया जाए। उनके भरण–पोषण हेतु, निरन्तर अनुदान प्रदान किया जाए। प्रत्येक गोसेवा सदन के आसपास उपलबध गोंचर भूमि को संरक्षण एवं विकास तथा गोचारा हेतु आरक्षित कर उपलब्ध करवायी जाए।

२. देश के समस्त गोचर, ओरण, पहाड़ नदी–नाले वन क्षेत्र आदि भूमियों पर राष्ट्रीय नीति बनाकर सीमांकन करके समस्त जिलों में दस हजार एकड़ के आस–पास की सबसे बड़ी उपलबध भूमि पर **''गोवंश अभ्यारणय''** स्थापित किय जायें। गोवंश अभ्यारण्य की स्थापना तथा संचालन का आधारभूत ढांचा तैयार करने में तकनिकी एवं वित्तिय सहयोग सरकारे करें।

३. प्रत्येक गोसेवा सदन में गोबर–गोमूत्र का प्लान्ट लगाकर बिजली, गैस, खाद तथा कीटनियंत्रक आदि के निर्माण की नीतिगत योजनाओं का कियान्वयन से गौसेवा सदनों के संचालन हेतु स्थानीय प्रबन्धन समिति को गठन हो तथा प्रत्येक गोसेवा सदन में गोचिकित्सा व गोपालन का प्रशिक्षण प्राप्त प्रबन्धकों को नियुक्त की जाए।

४. गोपालन हेतु **''गोमाता फैमिली कार्ड''** बनाए जाये, गोवंश का जन्म–मृत्यु पंजीकरण अनिवार्य किया जाये तथा गोपालकों को भी गोशालाओं की तरह दूध न देने योग्य गोवंश की सेवा हेतु परिश्रमिक एवं चारा, दाणा, दवाई आदि पर सब्सिडी दी जाये। ऐसे गोवंश की निराश्रित सुना छोड़ने पर दण्ड का प्रावधान भी हो।

५. केन्द्रीय तथा राज्यों में बने हुए गोरक्षा सम्बन्धित कानूनों को सशक्त बनाकर प्रदेशों में अवैध रूप से संचालित कत्लखानों पर प्रतिबन्ध लगे। गोवधिकों, गोतस्करों, परिवहन करने वाले चालक, परचालक वाहन के मालिक तथा गोतस्करी माफिया को ऐसा गोवंश बेचने वाले को भी गैर जमानती सजा मिले। तस्करी एवं वध हेतु गोवशं का परिवहन करने वाले वाहनों को आबकारी अधिनियम की भांति जप्त किया जाये। वधिकों से छुड़वाये हुए गोवंश को सरकार की स्थायी अनुदान प्राप्त गोशालाओं में प्रवेश दिलाया जाए।

६. गोसेवा सदनों में उन्नत नस्ल के सांडों का प्रबन्ध किया जाए जिससे भविष्य में अच्छी भारतीय गोवंश नस्लें तैयार हो सकें विदेशी संकरीकरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए। गांवों के गरीब गोपालकों के अनुपयोगी गोवंश को अगर वो पालने में असमर्थ हो तो गोसेवा सदनों में प्रवेश कराया जायें जिससे गरीब गोपालकों के ऊपर अतिरिक्त खर्च का बोझ न पड़े। वर्तमान में समस्त नस्वहीन नर गोवंश को सेवा सुश्रषा के साथ सम्पूर्ण संरक्षण प्रदाम करते हुए शास्त्रीय रीतियुक्त सात्विक नर नस्लीय गो संवर्धनात्मक प्रयासौं के माध्यम से नस्लहीन नर गोवंश पैदाईश एवं बढ़ोती पर विराम लगाने के गंभीर प्रयास किए जाये।

७. यूरिया व पैस्टीसाईज द्वारा खेती करने वाले विषवर्धक किसानों को गोपाक किसान बनाया जाये अर्थात् प्रति एक एकड़ कृषि भूमि पर एक गोवंश पालन करने बैलों से कृषि करने तथा गोबर व गोमूत्र की खाद से कृषि उपज करने वाले ग्रोपालक किसानों को प्रोत्साहित किया जाये। गोंसेवा सदनों के कृषि योग्य बैलों को अल्प शुल्क अथवा निशुल्क स्थानीय गोपालक किसानों को खेती व परिवहन हेतु निश्चित अवधि के लिए देने व पुनः प्रवेश दिलाने के प्रावधान किए जाए।

८. **गौसेवा सदनों** में निर्मित खाद, कीटनियंत्रक, बिजली तथा गैस आदि उत्पादों को उचित मूल्य पर किसानों को दिय जाए तथा उनके गोकृषि उत्पादों को अनुदानित मूल्य पर क्रय करने का प्रबन्ध हो। गोदुग्ध उत्पाद तथा गोकृषि उत्पादों को सभी प्रकार के करों से मुक्त रखते हुए सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर क्रय प्रबन्ध हेतु बाजार विकसित किया जाये।

६. भारतीय नस्ल की गायों, के गायों से निर्मित पंचगव्य ओषधियों की खरिदी शसन द्वारा की जाए, साथ ही गोदुग्ध के पाउडर व मक्खन को प्राथमिक शालाओं में अध्यनरत बालक–बालिकाओं के सम्पूर्ण पोषणार्थ

शेष पृष्ठ 11 पर

Thearyasamaj.org

वंशवादी दरबार में हिन्दू-विरोधी विदूषक या भगवा आतंकवाद का शिगूफा छोड़ने में सिद्हस्त!

माओवादियों व इस्लामी आतंक के निर्लज्ज समर्थक दिग्विजय सिंह से सचेत रहें!

✍ हरिकृष्ण निगम

तिल का ताड़ बनाने की कांग्रेसी कला में पारंगत, कभी एक विदूषक और कभी एक सुनियोजित रणनीति के तहत आतंकवादियों का समर्थन करने वाले और बहुधा कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की शह पर भगवा आतंकवाद का शिगूफ़ा छोड़ने वाले दिग्विजय सिंह की पृष्ठभूमि व छवि आज भी अनूठी कही जा सकती है और जो पहले अर्जुन सिंह की हिन्दू–विरोधी भड़काऊ भूमिका थी ठीक उसी की अनुकृति हमें उपलब्ध है। समय के अन्तराल में, देश में समरसता भंग करने वाले, कभी एक पाकिस्तानी प्रवक्ता का दायित्व निभाते हुए या कभी हुर्रियत के मुखौटे रहे, और कभी उन अलगाववादी माओवादी–नक्सलवादियों के साथ खड़े दिग्विजय सिंह अभी तक, कांग्रेसी संरक्षण के कारण, इतिहास के कचरेदान में नहीं डाले जा सके हैं। उनकी निरन्तर विवादास्पद और विरोधाभासी टिप्पणियों के राजनीतिक परिणाम इतने भयंकर रूप से अनुत्तरदायी रहे हैं कि उन्हें सहज ही अनदेखा करना असम्भव है।

दिग्विजय सिंह का हाल का सुर्खियों में बने रहने के लिए ऊटपटांग हरकत का पैनापन इसलिए भी अखरता है क्योंकि वे आज भी कांग्रेस के महासचिव और राज्यसभा के सदस्य के रूप में संसदीय विशेषाधिकारों के सुरक्षित कटघरे में आश्वस्त होकर छिपे बैठे हैं। बेसिर पैर की एक कामेडियन की भूमिका में एक ताजे बयान में उन्होंने कह डाला है कि आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल आर. एस. एस. की 'कांग्रेस मुक्त भारत' योजना का हिस्सा हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें दिल्ली के 'कांग्रेस मुक्त' होने का उतना अफसोस नहीं है जितना आम आदमी पार्टी और आर. एस. एस. पर आक्रोश है। दिग्विजय सिंह को यह जानना चाहिए कि 'कांग्रेस मुक्त' भारत का नारा आर. एस. एस. का नही भाजपा नेता और वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का है। कांग्रेस पार्टी की यह विशेषता है कि उसने कभी शोभनीय ढंग से अपनी हार नहीं मानी और अपनी हार से किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने का कभी प्रयास किया। इसके पहले भी उन्हें अन्ना हजारे के आन्दोलन के पीछे संघ का हाथ दीखता था। उन्हें परदे के पीछे से संघ उस आन्दोलन का संचालन करता दीखता था। यह अन्ना हजारे का मजाक उड़ाना था। जनता भूली नही है कि यह कांग्रेस पार्टी ही थी जिसने पिछली बार केजरीवाल की पार्टी की सरकार बनाने के लिए अपना बिना किसी शर्त के समर्थन प्रदान किया था।

कुछ दिनों पहले भोपाल के एक समाचार के अनुसार भाजपा के एक पूर्व कारपोरेटर महेश गर्ग ने पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस के तब भी रहे महासचिव दिग्विजय सिंह के विरूद्ध एक याचिका दायर की थी जिसमें उनके भाई लक्ष्मण सिंह और साठ अन्य लोगों के विरूद्ध १५–वर्ष पुराने सरला की मृत्यु के प्रकरण की पुनः जांच की मांग की गई थी। भोपाल जिला न्यायालय में यह प्रकरण दायर किया गया था जिसमें ४०–वर्षीया कांग्रेस की कार्यकर्ता सरला की रहस्यमय परिस्थितियों में फरवरी १९९७ में मृत्यु हुई थी। दिग्विजय सिंह उस समय मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे।

यह वही दिग्विजय सिंह है जिन्होंने एक बार केन्द्रीय वित्तमंत्री पी० चिदम्बरम पर आरोप लगाते हुए "एक बौद्विक घामण्डी"–इन्टेलेक्युएल एरोगेन्स–तक कह डाला था पर क्योंकि सोनिया गांधी ने अपनी अप्रसन्नता दिखाई थी उन्होंने चिदम्बरम से तुरन्त माफी भी मांग ली थीं। जब भी कोई बात बिगड़ती थी उनके पास एक ही रास्ता था–हिन्दूसंगठनों के विरुद्ध प्रलाप और भगवा संगठनों पर आतंकवाद में लिप्त होने का आरोप। चिदम्बरम प्रकरण के तुरन्त बाद महू, नान्देद और कानपुर में अशान्ति होने पर उन्होंने संघ में प्रशिक्षित हिन्दू अतिरेकियों की भर्त्सना की थी।

आज सारा देश स्पष्ट देख रहा है कि २–जी स्पेक्ट्रम घोटालों से जुड़े पूर्व टेलीकाम केन्द्रीय मंत्री, द्रमुक के ए. राजा,

सांसद कणीमोझी और कांग्रेस सांसद सुरेश कलमाड़ी राष्ट्रकुल खेलों में महाघोटाले के लिए जेल भेजे गए थे। तब कांग्रेस के महामंत्री दिग्विजय सिंह उनके बचाव में निर्लज्ज होकर गुहार लगा रहे थे किसी भी 'अन्डर ट्रायल' के हिरासत में रखने का किसी को अधिकर नहीं है। सत्यम घोटाले में आज इसी तरह राम लिंगम राजू और उनके भाई बी. रामा राजू जिन्हें सात वर्ष की कैद व रु ५ करोड़ का जुर्माना लगाया गया है। उनके बचाव में दिग्विजय सिंह अरसे से उतर कर तरह तरह के अनर्गल उदाहरण देते थे। गोल्डमेन साक्स के पूर्व अध्यक्ष रजत गुप्ता के जेल भेजे जाने के अमेरिकी उदाहरण द्वारा वे सिद्ध कर रहें थे कि अमेरिकी कांग्रेस के सिनेटर भी उनकी जमानत के समर्थक थे। दिग्विजय सिंह की यह दलील कोई पुरानी बात नही है और 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के २६ अक्टूबर २०११ के अंक में उनके लम्बे वक्तव्य के रूप में पढ़ी जा सकती है।

आई. टी. सेक्टर में रु० ७००० करोड़ की खुली लूट में सत्यम से जुड़े रामलिंगा राजू और उनके भाई बी. रामा राजू जुलाई २००९ में ही सत्यम के बोर्ड से निष्कासित कर जेल में भेजे गए थे और उनके बचाव में दिग्विजय सिंह दांव पेच खेलते रहे थे और वे कारनामें उन दिनों अंग्रेजी मीडिया में अभिलेखित हैं। आज जब उन्हें सात वर्षो का कारावास व दोनो को रु० ५ करोड़ का अलग अलग जुर्माना भरना पड़ रहा है तब उनके बचाव में उतरे सभी कांग्रेसी कर्ताधर्ताओं के भी संशयपूर्ण दुष्कृत्यों का शीर्ष जांच एजेन्सियों द्वारा स्वतः संज्ञान लेना चाहिए।

जनता अभी भी विस्मृत नहीं कर सकी है जब भाजपा ने दिग्विजय सिंह को "मानसिक रोगी होने का एक नमूना" कहा था। जैसा ऊपर इंगित किया गया है कि दिग्विजय सिंह अपनी विक्षिप्तता में अन्ना हजारे को लिख रहे थे कि वे जनलोकपाल के मुद्दे पर संघ के हाथों की कठपुतली बने हुए हैं। इसकी सफाई डा० मनमोहन सिंह की ओर से कांग्रेस के दूसरे महासचिव जनार्दन द्विवेदी और प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी द्वारा भी दी गई और इस अनर्गल वक्तव्य के लिए क्षमा मांगी गई थी। पहले दिग्विजय सिंह से भड़काऊ वक्तव्य दिलाए जाते रहे हैं और जब किरकिरी होती है तब कांग्रेस अध्यक्ष व पूर्व प्रधानमंत्री अपने बचाव में उनसे माफी भी मंगवाते रहे हैं। ऐसा रहा है दिग्विजय सिंह का हास्यास्पद व्यक्तित्व।

गत आम चुनावों के समय राजनीति विमर्श के लोकप्रिय सतहें प्रतीकों में पागलखाने या मनोरोगियों के रुग्णालयों को जिन राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वियों ने सर्वाधिक लोकप्रिय बनाया था उसमें अन्ना हजारे को दिग्विजय सिंह को यरवदा के मनोचिकित्सकों के पास भेजने की सलाह अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में भी चर्चित हुई थी। कांग्रेस में उस समय चाटुकारों की पंक्ति में वे अग्रगण्य माने जाते थे।

कांग्रेस पार्टी के आधुनिक इतिहास में दिग्विजय सिंह के रूप में न जाने क्यों ऐसा प्रवक्ता जनता के समक्ष लाया गया था जिसने राजनीतिक विमर्श के सतहेपन के सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। वे राजनीति के जोकर तो नहीं पर यह अवश्य सच है कि वे किसी बड़ी अदृश्य देशविरोधी लाबी के अनियंत्रित मोहरे अवश्य हैं। पहले मुम्बई में आतंकवादी हमले के तुरन्त बाद उन्होंने कहा कि इन हमलों के पीछे हिन्दूसंगठनों का हाथ है। उनके इस तरह के कुटिल वक्तव्य पाकिस्तान को भारत में करवाई जा रही आतंकवादी गतिविधियों से बच निकलने का सुविधाजनक गलियारा प्रदान करते थे। असली आतंकवादी संगठनों को बचाव के रास्तों को उपलब्ध कराना एक विक्षिप्त देशद्रोही ही कर सकता है। हम सब जानते हैं कि अरसे से पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे कश्मीर घाटी में ही लगभग हर प्रदर्शन के दौरान गूंजते थे पर कश्मीरी छात्रों ने यह दुस्साहस गत दो मार्च २०१४ को मेरठ के स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय में उस रविवार को लगाए गए जब एशिया कप में भारत पाकिस्तान के बीच हुए क्रिकेट मैच में भारत हारा था। वे उत्तर प्रदेश में मेरठ की धरती पर खुल कर ऐसे नारे लगाकर वहाँ के होस्टल में उत्पात भी करते रहे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने मजबूरी में उन्हें निलम्बित कर घर भेज दिया। बाद में उन ६६ कश्मीरी छात्रों के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा भी दर्ज किया था। विडम्बना है कि इस राष्ट्र विरोधी आचरण की निन्दा तो दूर जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और देश के अंग्रेजी मीडिया

शेष पृष्ठ 11 पर

Thearyasamaj.org

पीडीपी की हरकतें सहयोगी दल के लिए घातक

जयकृष्ण गौड़

इस घटनाक्रम को सब जानते हैं कि आजादी मिलने के बाद राजनैतिक परिस्थिति और अवसर का लाभ उठाने के लिए गठबंधन सरकारें बनी और महत्त्वाकांक्षा की स्पर्धा में समाप्त होती गई। यही कहानी संविद सरकारों की रही और यही स्थिति आपातकाल के विरोध से उपजी जनता पार्टी की रही। केंद्र में भी नरसिंम्हा राव से लेकर वाजपेयी सरकार और उसके बाद दस वर्षों तक चली मनमोहन सिंह सरकार भी गठबंधन की लाचारी से चलती रही।

इन गठबंधन में विचार की बजाए महत्त्वकांक्षा का प्रभाव अधिक रहा। हालांकि इस बारे में आंकलन हो सकता है कि गठबंधन राजनीति राष्ट्र केंद्रित रही या नहीं रही। यह तो कहा जा सकता है कि वोटों पर सबका ध्यान केंद्रित रहा। बहुमत के लोकतंत्र में राजनैतिक अस्तित्व और सत्ता के अधिकार प्राप्त करने के लिए राष्ट्र की बजाए वोटों पर ध्यान केंद्रित होता रहा। इसी परिस्थित्ति को मजबूरी में अल्पसंख्यक, जातिवाद और तुष्टीकरण के शब्द मुहावरे बन गए। जब गठबंधन बने तो गठबंधन धर्म का शब्द प्रचलित हुआ।

गठबंधन बनने और टूटने पर भी गठबंधन धर्म की दुहाई दी जाती है। परिस्थिति के कारण गठबंधन बने, इसके साथ ही बड़े दलों के सांथ मिलकर सत्ता में भागीदारी छोटे दलों ने की। राष्ट्रीय स्तर पर दो प्रमुख गठबंधन केंद्र की सत्ता में भागीदार रहे। भाजपा का एनडीए और कांग्रेस का यूपीए।

एनडीए की वाजपेयी सरकार ने केंद्र में छह वर्षों तक शासन किया और यूपीए की मनमोहन सरकार भी घोटाले में शामिल होने के साथ दस वर्षों तक चली। इन दोनों सरकारों के बारे में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राष्ट्रीय दल चाहे भाजपा हो या कांग्रेस हो, इनके साथ मिलकर ही गठबंधन की स्थिरता रह सकतीं है। परिस्थिति के अवसर का लाभ उठाने को चाहे अवसरवादी राजनीति कहा जाए, लेकिन कमोवेश सभी दल अवसर का लाभ उठाना चाहते हैं। अवसरवादी राजनीति से न राष्ट्रीय दल अछूते हैं और न क्षेत्रीय दल यह भारतीय राजनीति का स्वाभाविक चरित्र हो गया है।

गठबंधन की राजनीति की समीक्षा दो प्रकार से हो सकती है। एक ओर ऐसे गठबंधन हैं, जिनके विचारों में समानता है और दूसरे वे हैं जिनके विचारों में विरोधाभास है। जो वैचारिक आधार पर एक–दूसरे पर आरोप लगाते रहे हैं।

मुख्य रूप से तीन विचार प्रवाह भारतीय राजनीति में रहे हैं। राष्ट्रवादी, समाजवादी और साम्यवादी। कमोवेश इन वैचारिक आधार पर दल और गठबंधन बने और मिटते रहे। यह भी कह सकते हैं कि इन वैचारिक मुखौटों के साथ राजनीति होती रही। कांग्रेस के वैचारिक आधार की चर्चा में यही निष्कर्ष निकलेगा कि उसके स्थिर विचार कभी नहीं रहे। कभी समाजवादी, कभी सेकुलर विचारों का मुखौटा लगाकर कांग्रेस ने राजनीति की। कांग्रेस के इतिहास में २०१४ का लोकसभा चुनाव न केवल कांग्रेस की पराजय वरन् उसके पतन की कहानी कह रहा है। अब कांग्रेस के शहजादे विदेश में कांग्रेस को नया वैचारिक आधार और स्वरूप देने के बारे में चिंतन कर रहे है।

यह तो भविष्य बताएगा कि उनके चिंतन से कांग्रेस को ऊर्जा मिलेंगी या अंत होगा? भारत का इतिहास हजारों वर्षों का है, इसलिए कई प्रकार की राजनैतिक उथल–पुथल यहां हुई है। इसलिए कांग्रेस का अस्तित्व रहे या नहीं रहे, इससे कोई विशेष फर्क नहीं होगा। अपने तरीकों से संविधान और देश चलाने के लिए कांग्रेस को याद हमेशा किया जाएगा। कांग्रेस के पतन से यह तो स्पष्ट हो गया कि सेकुलर पाखंड की राजनीति को जनता ने नकार दिया है।

समाजवादी विचारों की राजनीति में अनुशासन कभी नहीं रहा। प्रजा समाजवादी, समाजवादी दल बने और मिटे, अब मुलायम, लालू यादव, शरद यादव और रामविलास पासवान आदि नेता हैं जो डॉ. लोहिया के विचारों का मुखौटा लगाए हुए हैं। राष्ट्रवादी राजनीति का प्रतिनिधित्व भारतीय जनता पार्टी करती हैं। हालांकि 'वाद' शब्द आयातीत है। संक्षेप में राष्ट्रहित से सरोकार रखने वाली राजनीति को ही राष्ट्रवाद कहा और माना जाता है। यह भी वास्तविकता है कि भाजपा सिद्धांत और संगठन आधारित पार्टी है। यह भी कहा जा सकता है कि सिद्धांत भाजपा का मूल आधार है। यदि इस आधार से डिगी तो भाजपा, भाजपा नहीं रहेगी। भाजपा ने वैचारिक आधार पर जिन दलों का गठबंधन बनाया वे थोड़े बहुत स्थिर रहे। शिवसेना प्रखर राष्ट्रवादी पार्टी है, उसके साथ महाराष्ट्र में भाजपा का गठबंधन करीब दो दशक से अधिक समय से है। इसी प्रकार पंजाब में अकाली दल के साथ सरकार है। हिन्दू–सिख एकता के लिए भी यह आवश्यक है।

जम्मू–कश्मीर में न्यूनतम साझा एजेंडे के साथ भाजपा ने दो माह के विचार–विमर्श के बाद पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के साथ सरकार बनाई है। पीडीपी कश्मीर घाटी क्षेत्र के मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि भाजपा को जम्मू क्षेत्र के हिन्दुओं का समर्थन मिला है। जनादेश के अनुसार वहां गठबंधन सरकार है। इस सच्चाई को भी नहीं नकारा जा सकता है कि कश्मीर घाटी की मुस्लिम जनता और जम्मू क्षेत्र की जनता के विचार और व्यवहार में जमीन–आसमान का अंतर है। जम्मू क्षेत्र के हिन्दू राष्ट्र की मूलधारा में समरस हैं। जबकि कश्मीर घाटी के मुस्लिमों में ही ऐसे तत्व हैं जो अलगाव और आतंकवादियों के समर्थन में खड़े दिखाई देते हैं।

पाकिस्तान के एजेंट भी हैं। घाटी में ही ऐसे लोग हैं, जो उनकी सुरक्षा करने वाली सेना पर पत्थरों की बारिश करते हैं। ऐसे लोगों का प्रतिनिधित्व करती है, पीडीपी/जम्मू कश्मीर की राजनीति का आंकलन दो प्रकार से हो सकता है। एक है घाटी केंद्रित और दूसरी है जम्मू–लद्दाख क़ेंद्रित। पीडीपी के प्रमुख और मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद ने शपथविधि के बाद पाकिस्तान, अलगाववादियों और आतंकी संगठनों का चुनाव में अवरोध पैदा नहीं करने के लिए आभार माना। इस पर विपक्ष को भाजपा पर आरोप लगाने का अवसर मिल गया। संसद में भी आरोप लगे, स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कहना पड़ा कि ऐसे कथनों से हमारी सरकार और दल (भाजपा) का कोई संबंध नहीं है।

इसी प्रकार पीडीपी के कुछ सदस्यों ने मुंबई हमले के मास्टर माइंउ अफजल गुरु के मृत शरीर के अवशेष लौटाने की मांग की। इस बारे में उल्लेख करना होगा कि भाजपा ने अफजल और कसाब को जल्दी फांसी देने की मांग बार–बार की थीं। इसी प्रकार अब मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद ने पुलिस के आला अधिकारी को यह निर्देश देकर विवाद पैदा कर दिया है कि जम्मू–कश्मीर की जेलों में बंद उन लोगों का छोड़ा जाए जिन पर अभी तक आरोप दर्ज नहीं हुए है। जेलों में आतंकी गतिविधियों ने शामिल और सेना पर हमला करने वाले बंद है। यदि इनको रिहा किया गया तो न केवल जम्मू–कश्मीर वरन् पूरे देश की शांति को खतरा पैदा हो सकता है।

ये वे सईद हैं जिन्होंने वी. पी. सिंह सरकार में गृहमंत्री रहते हुए अपनी बेटी मेहबूबा को आतंकियों के चंगुल से मुक्त कराने का खूंखार आतंकियों को रिहा कराया था। सईद से यह सवाल किया जा सकता है कि कश्मीर घाटी के कुछ लोगों को संतुष्ट करने के लिए क्या वे देश को खतरे में डालना चाहते हैं। अब जेल से १२० मौतों के जिम्मेदार अलगाववादी नेता और पाकिस्तान परस्त मसरत आलम को रिहा कर दिया है। इसके खिलाफ इस लाख का इनाम भी रखा था। यह सवाल भाजपा के लिए है कि क्या पीडीपीं के साथ सरकार को बनाए रखने के लिए वह राष्ट्र विरोधी

शेष पृष्ठ 11 पर

गोमाता का महत्व

गो न बचेगी तो देश मानवीय वेश कहाँ,
भारत कहाँ रहेगा कहाँ भूमि भारती।
दया और धर्म गो के बिना कहाँ पै रहेगा,
जप तप योग या हवन व आरती।।
धरती के सुत भी वृषभ कहाँ पै रहेंगे,
कहाँ होगी शस्य–श्यामा जीवन जो धारती।
देवों की सुरभि कामधेनु कहाँ पै रहेगी,
गो ही कामधेनु है जो मानव को तारती।।

गर्भ में पल रही बेटी की पुकार

मातु मेरी प्यारी क्या मैं तुम्हारी दुलारी नहीं,
कोख में न मारिये माँ जन्म लेने दीजिए।
समझाइये पिता जी को बेटी दुलारी है ये,
मेरी क्रूर हत्या का ये पाप नहीं लीजिये।।
वैध डॉक्टर सदा प्राणदाता होते उन्हें,
ऐसा पाप करने को प्रेरित न कीजिये।
मेरे वंदनीय पितु मातु मैं तुम्हारा नाम,
उज्जवल करूंगी ये विश्वास मान लीजिये।।

Thearyasamaj.org

सत्ता के दलाल और भारतीय राजनीति

विनोद बब्बर

सत्ता की राजनीति भी अजीब है। जहां सत्ता की ठसक है, वहीं ठोकर भी कम नहीं है। यहां रेड कारपेट है तो रेड कार्नर भी। क्योंकि सत्ता के दलाल शाश्वत हैं। कोई आये, कोई जाये उनका जलवा बरकरार रहता है। देश से विदेश तक, सत्ता से विपक्ष तक सब उनके हैं और वे सबके हैं। सत्ता के ये दलाल अपना काम निकालने के लिए खूब प्यार उड़ेलते हैं तो मौका पड़ते ही 'निर्मोही' होकर पर्दाफाश करने से भी नहीं चूकते।

स्वयं को पाक–साफ साबित करने के लिए कालिख का अंघड़ चलवा सकने वाले सत्ता के इन दलालों से सावधान रहने की बात कभी मिस्टर क्लीन यानि राजीव गांधी ने भी की थी लेकिन इतिहास साक्षी है कि वे खुद भी सावधान नहीं रह सके और.....। ताजा उदाहरण सिद्ध करता है कि सत्ता के इन दलालों को ५६ इंच के सीने से टकराते हुए भी कोई खौफ नहीं। नित्य–प्रति नये रहस्योदघाटन कर सभी को अपना मित्र और सहयोगी बताने वाला यह शख्स आखिर सत्ता का दलाल नहीं और क्या है? हाँ, यह बात अलग है कि इसके कार्यक्षेत्र और प्रभाव को देखते हुए इसे साधारण नहीं बल्कि यूनिवर्सल दलाल माना जाना चाहिए।

आईपीएल क्रिकेट के गोरखधंधे के सिरमौर ललित मोदी पर फेमा से जुड़े अनेक गंभीर आरोप हैं। बहुत संभव है कि उसने अपने अपराधों के लिए कथित तौर पर नेताओं का इस्तेमाल भी किया हो। आरोप सामने आने पर देश से फरार होने में भी उसकी मदद की गई होगी। अब यह मदद 'किसने की और कब की' यह सवाल महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि उसने स्वयं को सबका करीबी सिद्ध करने में कोई कसर बाकि नहीं रखी। देश का भगोड़ा, अभियुक्त जिस चतुराई से शीर्ष नेताओं को कोसने के बाद राष्ट्रपति की सचिव से यूपीए सरकार के मंत्रियों और गांधी परिवार की चौखट तक जा पहुंचा है उससे स्पष्ट है कि वह विवाद की डोर अपने हाथ में रखते हुए राजनैतिक अस्थिरता बनाये रखना चाहता है। उसका यह कदम देश के हित में हो, न हो लेकिन देश के दुश्मनों को अवश्य राहत प्रदान करेगा इसलिए बिना देरी किये उसका भारतीय पासपोर्ट रद्द करने सहित हरसंभव प्रयास कर उसे भारत लाना चाहिए। यह सही कि एक अवसर पर मानवीय आधार पर उसकी मदद की गई लेकिन इसका मतलब यह नहीं होना चाहिए कि उसे अभयदान मिल गया। वह विदेशी धरती पर बैठ अपनी जन्मभूमि को अपमानित करता रहे और हम टुकर–टुकर देखते रहे।

अब यह कोई रहस्य नहीं रहा कि राजनीति में सभी का सहयोग, सभी से दुआ सलाम चलती है लेकिन ललित मोदी के बहाने जिस तरह से भानुमति का पिटारा खुलकर सामने आ रहा है उससे 'सांपनाथ, नागनाथ और भुजंगनाथ' की अवधारणा सत्य सिद्ध हो रही है। जिस प्रकार भाजपा का यह कहना कि 'यह ड्राफ्ट स्टेटमेंट था और इसे जमा करने के लिए वसुंधरा स्वयं किसी अदालत में कभी उपस्थित नहीं हुई। या यह कहना कि हलफनामे के अंतिम पन्ने पर उनके हस्ताक्षर हैं लेकिन शेष पन्नों पर नहीं हैं' और ठीक उसी प्रकार कांग्रेस का तर्क कि, 'प्रियंका, राबर्ट का ललित से मिलना अपराध नहीं है' यदि दुष्यंत और ललित के व्यवसायिक रिश्तों में कुछ अनियमितता हो तो उसे सामने लाया जाना चाहिए। लेकिन

हास्यास्पद ही कहा जाएगा। मुंबई के पूर्व पुलिस कमिश्नर राकेश मारिया द्वारा लंदन में ललित से मिलने पर दिया गया स्पष्टीकरण भी आसानी से गले नहीं उतरता। इस सारे खेल को केवल सुषमा, वसुंधरा, प्रियंका, सिब्बल आदि के दोषी अथवा निर्दोष होने से जोड़ना गलत होगा। इसके तह तक जाने की जरूरत है। प्रधानमंत्री जी को सामने आकर राष्ट्र को न केवल यह विश्वास दिलाना चाहिए कि ललित सहित सत्ता के किसी भी दलाल को हावी नहीं होने दिया जाएगा, बल्कि उसे कानून की गिरफ्त में लाने में कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिए। यदि कोई मंत्री दोषी है तो बिना विलम्ब किए सर्वदलीय जांच की घोषणा करनी चाहिए। इसी प्रकार पिछली सरकार के कार्यकाल में हुई गड़बड़ियों की जांच को प्रभावित करने अथवा वर्तमान प्रशासन को पंगु बनाने के प्रयासों को सफल नहीं होने देना चाहिए। नई सरकार ने अपने गठन के फौरन बाद जिस प्रकार फुर्ती और सजगता दिखाई उससे देश में परिवर्तन की आशाओं का उफान उठ रहा है। इन प्रयासों को क्रिकेट को खेल की बजाय व्यवसाय, फिक्सिंग, जुआ, सट्टा बनाने वाले सत्ता के दलालों ने उसे जबरदस्त ठेस पहुंचाई है। यदि इस मामले को हल्के लिया गया तो देश की बहुसंख्यक जनता के सामने अगली बार फैसला लेते हुए धर्म संकट होगा कि वह किस पर विश्वास करें क्योंकि उसके सामने कोई आदर्श नहीं, केवल आदर्शों के मुखाटे ही होंगे। इस मामले में जिस तरह से भाजपा बंटी हुई दिखाई दे रही है उसने पार्टी की छवि को प्रभावित किया है। पहली बार किसी गैरकांग्रेसी दल को पूर्ण बहुमत प्रदान करने वाले देश के उन करोड़ों लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए पार्टी को सामूहिक नेतृत्व और निर्णय में अनुभव की भागीदारी के महत्व पर विचार करना चाहिए। अपराधी बचना नहीं चाहिए परंतु योग्य का निरादर भी नहीं होना चाहिए। कोई भी दल अथवा समाज किसी एक व्यक्ति अथवा खानदान की जागीर नहीं हो सकता। बेशक लोकराज लोकलाज से चलता है परंतु नेतृत्व के लिए समता, विकास, न्याय और संविधान की कसौटी पर खरा उतरा जरूरी होता है। ललित कांड की अग्निपरीक्षा से भारतीय राजनीति अपने उस 'लालित्य' को प्राप्त करेगी जिसकी प्रतीक्षा इस देश के कोटि–कोटि जन को है। लेकिन यह तभी संभव है जब ललित मोदी का असंभव लगने वाला वह ट्विटर हमारे सामने हो जिसमे वह स्वयं किसी भी जांच का सामना करने भारत आने की घोषणा करे। और अगर यह नहीं होता तो पर्यात्यारोपण अथवा इन्टरपोल के माध्यम से सत्ता के दलाल की गिरफ्तारी और परिवर्तन के शंखनाद का समाचार शीघ्र से शीघ्र आना ही चाहिए। बस तभी होगा राजनीति का शुद्धिकरण।

कांग्रेस को अब याद आये अम्बेडकर

डा० सुशील गुप्ता

हमेशा से केवल गांधी–नेहरू नामों का जाप करने करने वाली कांग्रेस पार्टी अब अपने सबसे बुरे दिनों में दलित वोटों को जोड़ने की खातिर डा० अम्बेडकर की १२५वीं जयन्ती वर्ष के कार्यक्रमों को मनाने की योजनायें बना रही है। डा० अम्बेडकर का जन्म १४ अप्रैल १८६१ को मध्यप्रदेश में हुआ था। अतः उनकी १२५ वीं जयन्ती वर्ष २०१५–१६ में होता है। अब कांग्रेस को इसी से अपनी संजीवनी मिलने की आशा लगती है। वैसे कांग्रेस के पिछले शासन काल में मुखौटा प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह इस देश के सभी संसाधनों का पहला अधिकार दलितों का नहीं, बल्कि केवल मुसलमानों का बताकर अपने इरादे स्पष्ट कर चुके हैं। परन्तु क्षेत्रीय दलों की मुस्लिम परस्ती व कांग्रेसी सरकारी मुस्लिम परस्ती में इस देश का राष्ट्रवाद विजयी हो गया, इससे कांग्रेस भौंचक्की रह गयी। अतः अब क्रांग्रेसी युवराज अपने गत दिनों के अज्ञातवास (?) से कोई दूर की कौड़ी, दलित वोटों को लुभाने तथा हिन्दू एकता को तोड़ने हेतु ढूंढ कर लाये हैं! वैसे कांग्रेस तथा इसके पुश्तैनी नेता कभी भी डा० अम्बेडकर के समर्थक नही रहे। महात्मा गांधी ने सन् १६३१ में लंदन में गोलमेज सम्मेलन में दलित प्रतिनिधि के रूप में डा० अम्बेडकर के आने का विरोध किया था। क्योंकि गांधी स्वयं को ही दलितों का भी एकमात्र प्रतिनिधि मानते थे। जबकि गांधी जी ने मुस्लिम प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत किया था। इसी प्रकार आजादी के बाद बनी पहली नेहरू सरकार से डा० अम्बेडकर को मतभेद के कारण १६५१ में त्यागपत्र देना पड़ा था। १६५२ में प्रथम लोकसभा चुनाव में जवाहरलाल नेहरू ने डा० अम्बेडकर को हरवाने का सफल प्रयास किया था तथा डा० अम्बेडकर की इस हार की सूचना अति प्रसन्नतापूर्वक पत्र लिखकर नेहरू ने अपनी घनिष्ठ अन्तरंग महिला मित्र लेडी माउंटबेटन को भी लंदन तक दी थी। परन्तु डा० अम्बेडकर २ महीने बाद ही जनसंघ, हिन्दू महासभा, निर्दलीय आदि के सहयोग से राज्यसभा हेतु चुन लिये गये। कांग्रेस की जवाहर लाल नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक की सरकारों ने डा० अम्बेडकर को कभी भारत रत्न के लायक न समझा। और न ही उनका तैलचित्र संसद होल में लगवाया। न ही, उनके जन्म–दीक्षा–मृत्यु आदि स्थानों के स्मारकों को बनवाया। जबकि जवाहर लाल ने १६५५ में तथा इन्दिरा गांधी ने १६७१ में स्वयं को ही भारत रत्न दे डाला था। डा० अम्बेडकर को भारत रत्न १६६० में केन्द्र में भारत समर्थित जनता दल सरकार में ही मिल पाया था। अब सोनिया पुत्र राहुल डा० अम्बेडकर पर एक विजन डाक्यूमेंट लाने, उनके १२५ वीं जयन्ती कार्यक्रमों को मनाने, कांग्रेस में दलितों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने आदि टोटकों की तैयारी कर रहे हैं। परन्तु भारतीय संसाधनों पर मुसलमानों का पहला हक" वाले २००८ के वायदे का क्या होगा? बेहतर होगा, पप्पू व समस्त कांग्रेसी इस १२५ वीं जयन्ती के अवसर पर डा. अम्बेडकर के विचारों को केवल पढ़ ही ले।

earyasamaj.org

ENOUGH IS ENOUGH

Arvind

Just like their support in the Valley, reporting about the deeds of separatists have also become irrelevant. But it is mandatory to expose the agenda's of separatists like Syed Ali Shah Geelani, who just to garner limelight, insulted Army officers' sacrifice by terming terrorists as 'Martyrs'. Not only did he call terrorists as "martyrs" and "sacred blood" but also tried to instigate the youth of the Valley. "The two fighters (terrorists) fought bravely and demonstrated the fact that every Mujahid (warrior) of Hizb committed to Kashmir cause is ready to sacrifice his precious life. The Kashmiri boys are preferring taking guns in their hands to taking jobs," said 84 years old Geelani who seems to have learnt no lesson from his lifetime experience.

Where anti-human Geelani, who by his anti-national approach is inciting youth, which eventually can cost their lives; Indian security personnel are sacrificing themselves to save the same lives.

Only a day after Colonel Mahendra Nath Rai received gallantry medal, he was leading his troops against heavily-armed terrorists on 27 January in Tral of Jammu and Kashmir. Unfortunately, it proved to be his last battle in serving his nation while fighting terrorism and insurgency. Col. Rai, a 2/9

Gorkha Rifles officer and J&K police head constable Sanjeev Singh laid their lives securing the life of innocent people of J&K. Two terrorists were also killed in this encounter.

Opportunist Geelani's group went to condole the family of terrorists when the whole country was paying tribute to the saviours of the nation. Geelani, would have been charged for treason or would have been shot by someone for this kind of bare cheekiness in Pakistan. But this is India! Here the Constitution of India guards his freedom (of speech) while the security personnel like MN Rai take care of safety. It's important to understand here that it is the power of Indian Constitution and not his status that is letting him roam freely up to the houses of terrorists.

As India mourned its two bravehearts who were killed in a recent encounter in Tral, in J&K, Hurriyat leader Syed Ali Shah Geelani sparked a furore by calling terrorists as "Martyrs".

Kashmiris would find separatists like this at forefront while introspecting the reasons as to how their ancestral land has become synonymous to terrorism and intolerance. They would find only these separatists to blame if they decide to churn upon the reasons as to how a land, known for origin of Vedas and its age old traditions, has been converted to a region where patronising of rapists and murderers like those killed in encounter with Col. MN Rai has become rampant.

With time, the so called mentors of the Kashmiriyat actually have proven to be killers of the same. Like a state comes in the evolution of a child when he starts, based on his learning, to analyse, doubt and question even his parents, the Valley is getting mature and as things are getting unfolded, Kashmiris seems to have made up their mind to bycott all the separatists. Geelani did not find takers for his anti-Army (Saviour in Kasmir flood) rhetoric in Valley and anger against him in other regions of the state found its way out in the slogans like "Desh ke Gaddaron ko, Goli Maro Salaon ko". Anger echoed in every street of Jammu.

People, across the nation, have demanded immediate arrest and are of the opinion that statement of this kind should not be tolerated in any part of the country. Outrage on the social media against the statement of Geelani is an indication that it's time when government agencies should issue a stern warning to fringe elements like Geelani. Enough is enough!

अंतर्राष्ट्रीय संतुलन की कसौटी पर योग

मिथिलेश सिंह

सम्पूर्ण विश्व में योग से भला कौन परिचित नहीं होगा. यूं तो पहले ही अनेक योग गुरुओं, जिनमें बाबा रामदेव का नाम प्रमुख है, योग को जबरदस्त ढंग से प्रचारित और प्रसारित कर दिया था, लेकिन **जिस** ढंग से भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसकी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग की है, उसने प्रत्येक भारतीय की छाती ५६ इंच की वास्तव में कर दी है। राष्ट्रीय स्तर पर भी योग को लेकर तमाम राजनीतिक दल अपने **अपने** हित देखते हुए विरोध या समर्थन कर रहे हैं, किन्तु इसको लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रही राजनीति कुछ ज्यादा ही दिलचस्प दिखती है। आगे की चर्चा से पहले यह बात दोहराना आवश्यक है कि नरेंद्र मोदी ने बेहद सक्रियता से विश्व में भारत का मेक ओवर करने के इस अवसर को मजबूती से पकड़ लिया है. उनके पिछले चुनावी भाषणों में वह कहा करते थे कि 'कॉमनवेल्थ गेम्स' जैसे अवसर भारत को विश्व में मजबूत सम्मान दिला सकते थे, जो कांग्रेस सरकार के घोटाले से बदनुमे दाग में बदल गए। सच कहा जाय तो उन भाषणों में नरेंद्र मोदी की कसक दिखती थी और अब उनके सामने जब 'योग दिवस' के रूप में अवसर आया तो उन्होंने इसे हाथ से फिसलने नहीं दिया। जानना दिलचस्प होगा कि, जिस

आनन–फानन में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में २१ जून का समय घोषित किया, उससे कई भारतीयों को भी आश्चर्य हुआ। यह बात हम सब जानते ही हैं कि नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय परिदृश्य पर उदय से पहले ही वह चर्चित अंतर्राष्ट्रीय हस्ती बन चुके थे। चुनाव के बाद तो उनके क्रियाकलापों की खबरें पूरे वैश्विक परिदृश्य पर ही छाई रहीं। ऐसे में उनकी महत्वाकांक्षा और अंतर्राष्ट्रीय **छवि हासिल** करने की चाहत को **अमेरिकी** नीतिज्ञों ने बेहद तेजी **से पकड़ा**। जरा गौर कीजिये, आनन–फानन में न सिर्फ उन पर लगाया गया प्रतिबन्ध हटाया गया, बल्कि बराक ओबामा ने तमाम आंकलनों को गलत साबित करते हुए २६ जनवरी पर भारत की मेजबानी तक कबूल की। इसके बाद भी ऐसी कई घटनाएं हुई, जिनमें असैनिक परमाणु करार की उलझनों को दूर करना भी शामिल है, जिनसे साफ जाहिर होता है कि अमेरिका नरेंद्र मोदी को लेकर किस हद तक सजग था। ऐसे में, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को बेहद जल्दी मान्यता मिलने को भी, भारत और नरेंद्र मोदी के प्रति अमेरिकी झुकाव की तेजी की ओर इंगित करना माना जा सकता है। इस कड़ी में, अमेरिकी झुकाव से चीन की नाराजगी को दूर करने की कोशिश भारत ने तुरंत की और २६ जनवरी के तुरंत बाद पहले विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीन का दौरा करके क्षेत्रीय संतुलन साधने की कोशिश भी की। समस्या तब दिखी जब भारत के पारम्परिक मित्र रहे रूस के राष्ट्रपति का, नरेंद्र मोदी प्रशासन द्वारा अनदेखा करने का दर्द सामने आया। जब उन्हें अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंच की एक बैठक में बताया गया कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योग के लिए अलग से मंत्रालय शुरू किया है तो उनका हैरानी भरा सवाल था, क्या मोदी स्वयं योग करते हैं? योग के लिए अलग से मंत्रालय पर संदेह जताते हुए पुतिन ने यह भी कहा कि आखिर हर कोई यह क्यों करेगा? पुतिन यहीं नहीं रुके, बल्कि उन्होंने खुद की तुलना मोदी से किये जाने को भी स्पष्ट शब्दों में नकार दिया, साथ ही साथ स्वयं और मोदी के बारे में कहा कि 'मैं सख्त नहीं हूं, बल्कि हमेशा समझौते करना चाहता हूं, जबकि उनका (मोदी) रुख कड़ा

शेष पृष्ठ 11 पर

Thearyasamaj.org

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

राजस्थान प्रदेश इकाई द्वारा हिन्दू महासभा शताब्दी समारोह एवं रानी दुर्गावती के बलिदान दिवस को मनाना गौरवपूर्ण कार्य : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके हिन्दू महासभा की राजस्थान प्रदेश ईकाई के प्रभारी मुकुल मिश्रा को हिन्दू महासभा का शताब्दी समारोह एवं रानी दुर्गावती बलिदान दिवस मनाने को लेकर अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। गौरतलब है कि वर्ष २०१५ में हिन्दू महासभा ने अपनी स्थापना के १०० वर्ष पूरे किये हैं और इस अवसर पर केंद्रीय स्तर के साथ साथ पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं, जबकि रानी दुर्गावती जैसी वीरांगना का हमारे इतिहास में विशेष स्थान है। मात्र दस हजार राजपूतो की मामूली फौज लेकर एक राजपूतानी, पचास हजार की फौज वाले तुर्क अकबर की विशाल सेना को पराजित कर वीरता और साहस का प्रतिमान स्थापित किया था। चंदेल राजवंश में जन्मी रानी दुर्गावती राजपूत राजा कीरत राय की बेटी थी। उनका जन्म ५ अक्टूबर १५२४ को बांदा में हुआ था, जबकि अनेक वीरता के और धर्मार्थ के कार्य करने के पश्चात उनका बलिदान २४ जून १५६४ को हुआ। रानी दुर्गावती ने गंभीर रूप से घायल होने के बाद अपने आपको मुगलों के हाथों अपमान से बचाने के लिए अपने वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं और हिंदुस्तान के इतिहास में अपना नाम अमर कर लिया। हिन्दू महासभा के केंद्रीय नेताओं ने राजस्थान प्रदेश इकाई को ऐसी महान वीरांगना को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए साधुवाद दिया। इस अवसर पर हिन्दू महासभा की केंद्रीय इकाई से राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री मार्गदर्शन के लिए राजस्थान के लिए प्रस्थान करेंगे।

देश के महत्वपूर्ण पदों पर सिर्फ राष्ट्रभक्त लोगों का ही अधिकार होना चाहिए : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में न पहुँचने को लेकर कड़ी आलोचना की है। गौरतलब है कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हामिद अंसारी के न पहुँचने को लेकर भाजपा और आरएसएस के वरिष्ठ नेता राम माधव ने कड़ी आलोचना की थी। हालाँकि, इस सन्दर्भ में बाद में आये उपराष्ट्रपति कार्यालय के स्पष्टीकरण में यह कहा गया कि उन्हें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आमंत्रण नहीं मिला था। इस वक्तव्य पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने स्पष्ट कहा कि इतने महत्वपूर्ण दिवस पर उपराष्ट्रपति को निमंत्रण नहीं मिलने की बात हजम नहीं होती है और यदि ऐसा हुआ भी है तो अंतर्राष्ट्रीय यौग दिवस जैसे भारतीय गौरव के दिन किसी निमंत्रण का इन्तेजार किये बिना ही जाना चाहिए अथवा उपप्रष्ट्रपति कार्यालय को इस सम्बन्ध में स्वतः सक्रीय रहना चाहिए। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने देश में महत्वपूर्ण संवैधानिक पदों पर केवल देशभक्तों को प्रतिष्ठित करने की वकालत करते हुए कहा कि उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी पहले भी एक रामलीला कार्यक्रम में भगवान राम की आरती करने से मना करके भारतवर्ष की संस्कृति का अपमान करने की कोशिश की थी। हिन्दू महासभा इस प्रकार के किसी भी व्यक्ति द्वारा भारतीय संस्कृति का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगी और इस सम्बन्ध में राष्ट्रपति महोदय और प्रधानमंत्री से संपर्क करके अपना विरोध दर्ज कराएगी।

''हिन्दू महासभा ने वीरांगना लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस'' माल्यार्पण कार्यक्रम आयोजित किया

अखिल भारत हिन्दू महासभा जिला ग्वालियर द्वारा १८ जून प्रातः वीरांगना लक्ष्मीबाई बलिदान दिवस पर समाधि स्थल पर माल्यार्पण कर श्रद्धाजंलि अर्पित की। इसके बाद उप कार्यालय पर जिलाध्यक्ष लीला शाक्य महामंत्री राकेश शर्मा के संचालन में विचार सभा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर प्रान्तीय अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा ने कहा कि वीरांगना ने अंग्रेजों को मुंहतोड़ जवाब देते हुये ग्वालियर की तपोभूमि पर वीरगति प्रदान कर लड़ते लड़ते अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनके इतिहास का अनुशरण करने का समय है। वर्मा ने कहा कि वीरांगना की प्रतिमा के पीछे उनके पूर्व दामोदर की प्रतिमा लगी थी। वह गायब हो गई और निगम प्रशासन मूक दर्शक बनकर बैठा है। वर्मा ने पुनः प्रतिमा उनके की प्रतिमा लगाने की मांग की। वर्मा ने देश के बलिदानियों की उपेक्षा का आरोप लगाते हुये राष्ट्र धर्म रक्षा का संकल्प व्यक्त किया।

हिन्दू महासभा ने वीरांगना की श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रान्तीय अध्यक्ष मोहन लाल वर्मा जिलाध्यक्ष लीला शाक्य महामंत्री राकेश शर्मा, मंत्री दामोदर यादव, कार्यलय मंत्री आकाश शाक्य, प्रचार मंत्री मेवाराम हाईबर संजय सहित अनेक कार्यकर्तागण शामिल थे।

संत श्री आसाराम जी बापू की रिहाई के लिए हिन्दूवादी संगठनों ने किया प्रचण्ड प्रदर्शन

नई दिल्ली,२८ जून,२०१५ धर्म रक्षा दल, अखिल भारत हिन्दू महासभा, यूनाइटेड हिन्दू फ्रन्ट, भारत जागृति मोर्चा, हिन्दू सेना, विश्व हिन्दू सेवक संघ, हिन्दू रक्षक दल, धर्म रक्षक श्री दारा सेना, श्रीराम सेना सहित हिन्दूवादी संगठनों ने राष्ट्रीय संत श्री आसाराम जी बापू, श्री नारायण प्रेम सांई एवं साध्वी प्रज्ञा ठाकुर की रिहाई के लिये भारतीय संसद पर प्रचण्ड प्रदर्शन किया तथा जन्तर–मन्तर पर धरना दिया।

हिन्दूवादी संगठनों के सैंकड़ों प्रतिनिधि प्रातः जंतर–मंतर पर एकत्रित हुए व धरना दिया। बाद में संसद के सामने जाकर प्रदर्शन किया तथा भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री को ज्ञापन सौंपा। यूनाइटेड हिन्दू फ्रन्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जयभगवान गोयल, हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा, ध र्म रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष मानिक देशमुख और भारत जागृति मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अशोका नन्द जी, हिन्दू सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु गुप्ता, विश्व हिन्दू सेवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित जी, हिन्दू रक्षक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पिंकी चौधरी, धर्म रक्षक द्वारा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुकेश जैन, श्री एम.एम. त्रिपाठी अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट, श्री विनीत त्यागी एवं निरंजनी अखाड़ा के श्री बालयोगी ने धरना–प्रदर्शन में भाग लेते हुए भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन के माध्यंम से हिन्दूवादी संगठनों ने राष्ट्रीय संत श्री आसाराम जी बापू, श्री नारायण प्रेम सांई व साध्वी प्रज्ञा ठाकुर को तत्काल रिहा करने व उनके ऊपर लगे सभी मुकदमें वापस लेने, हिन्दू साधू–सन्तों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान कँरने, हिन्दू वादी संगठनों के नेताओं पर ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जा रहे षडयन्त्रों को समाप्त करने व ईसाई मिशनरियों पर कार्रवाई करने, हिन्दू मन्दिरों, मठों, आश्रमों को पूर्ण रूप से संरक्षण प्रदान करने की मांग की। हिन्दूवादी संगठनों ने नेताओं ने चेतावनी दिया कि यदि हमारी मांगे नहीं मानी जायेंगी तो देश के सभी हिन्दूवादी व राष्ट्रवादी संगठन तथा साधु–संत मिलकर केन्द्र की सरकार के विरूद्ध जनान्दोलन करेंगे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

aryasamaj.org

शेष पृष्ठ 1 का

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर.......

योग करने का। प्राप्त जानकारी के मुताबिक योग दिवस के मौके पर राजपथ पर आयोजित समारोह में रविवार को ३५,६८५ लोगों ने एक साथ योग किया। यह पहला कीर्तिमान है। आयोजन में ८४ देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे, यह दूसरा रिकॉर्ड है। गौरतलब है कि योग दिवस के आयोजन को सफल बनाने के लिए आयुष मंत्रालय पिछले दो महीने से जुटा हुआ था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मुस्लिम धर्मगुरुओं द्वारा भारतीय संस्कृति की पहचान योग का विरोध करने की तीव्र निन्दा की है हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि योग को सम्प्रदाय से ऊपर उठकर देखना चाहिए।

शेष पृष्ठ 5 का

समष्टि-प्रकृति की पोषक महान.......

उनको मध्याहन भोजन में प्रदान किया जाए।

१०. भारतीय गोवंश के संवर्धन एवं पंचगव्य अनुसंधान हेतु गो विश्वविद्यालय की स्थापना क़ी जाए। जिसमें विद्यार्थियों को वैदिक कामधेनु विज्ञान के अनुसार विभिन्न तकनिकी व भाषायी रोजगारोन्मुखी पाठयक्रमों के अर्न्तगत शिक्षा देने का प्रबन्ध हो।

११. उपरोक्त गोसेवा के समस्त कार्यों की क्रियान्वित हेतु गोमाता को सर्वप्रथम **''राष्ट्र माता''** घोषित करते हुए केन्द्र तथा देश के सभी राज्यों में स्वतन्त्र ''गोपालन मंत्रालय'' का गतन करना अल्पावश्यक माना जाये।

लेखक का दृढ़विश्वास है कि साक्षात प्रकृति स्वरूपा गाय के वैज्ञानिक व व्यवहारिक महत्व उपादेयता एवं आवश्यकता के मानव जाति के लिए अधिक समय तक अनदेखी करना असंभव है। निश्चित ही देश में एक न एक दिन सजग सुयोग्य सुसंस्कारी, राष्ट्र, सेवापरायण पवित्र ह्रदउय युक्त जागृत बुद्धि युक्ति शासन व्यवस्था उभरेगी। जिससे करोड़ो गोप्रेमी, गोभक्त, गोउपासक, गोरक्षक, गोसेवक एवं गोपालक किसानों सहित सम्पूर्ण जनमानस की भावनानुसार गोमाता को **''राष्ट्र माता''** घोषित करते हुए गोवंश के संरक्षण सम्पोषण, संवर्धन एवं गोउत्पादों के विधिपूर्वक विनियोग हेतु शिघ्रातिशीघ्र उपरोक्त बिन्दुओं पर विशेषज्ञों के साथ गहन चिंतन मनन करके केन्द्र एवं सभी राज्यों में स्वतन्त्र **''गोपालन मंत्रालय''** को स्थापना का मार्ग प्रशस्त अवश्य होगा।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 6 का

वंशवादी दरबार में हिन्दू-विरोधी.....

ने उत्तर प्रदेश सरकार की निन्दा कर निर्णय पलटने को क़हा और सरकार से माफी मांगने पर जिद करने लगे। भारत में कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता शशि थरूर, पूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री सुशील शिन्दे व दिग्विजय सिंह भी अलगाववादी छात्रों के पक्ष में उठ खड़े हुए। मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव के लिए तो अल्पसंख्यक समुदाय की नाराजगी की कल्पना से ही ज्वर आ गया और आधी रात को उन ६६ छात्रों के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा वापस लेना पड़ा। जहां तक पाक–समर्थक अलगाववादियों का प्रश्न है कि वे जानते हैं कि भारतीय दण्ड संहिता में कम से कम तीन साल और अधिकतम उम्र कैद की सजा देशद्रोह के लिए मिल सकती है। यह भी सर्वविदित है कि नवम्बर २०१३ में कश्मीर विश्वविद्यालय श्री नगर में शेक्सपीयर के नाटक 'हेमलेट' पर आधारित फिल्म 'हैदर' के फिल्मांकन के समय तिरंगा फहराते हुए जैसे ही कलकारों ने 'जयहिन्द' का नारा लगाया वैसे ही वहां के छात्रों ने 'पाकिस्तान जिन्दा बाद' के नारे लगाते हुए शूटिंग बन्द करा दी सेट को नष्ट कर डाला। उस समय भी दिग्विजय सिंह मात्र आयोजकों को कोसते रहे थे। मसखरों और विदूषकों की राजनीतिक दुनिया में छुटभैयों की अपनी एक निजी त्रासदी भी है– उनकी सीमित क्षमता जैसे तैसे गम्भीर विमर्श का बोझ उठा रही है। वे नहीं जानते हैं कि प्रत्युत्तर के उनके तर्क सिर्फ उनका चिड़िचिड़ापन व्यक्त करते है वे झगड़ालू जैसे दीखते हैं और उन्हें शायद लगता होगा कि विरोधियों को नीचा दिखा कर दुनियाँ जीत ली है। उनका व्यक्तित्व एक साथ हास्यास्पद और दयनीय लगता है। पश्चिमी मीडिया में ऐसे लोगों के लिए बहुधा वे शब्द या विशेषज्ञ प्रयुक्त किए जाते हैं जो हुमारे नेताओं के लिए अधिक सटीक लगते है। वहाँ सनकी या जिद्दी अथवा बड़बोले राजनीतिबाजों के लिए 'मेनियाक' व 'मेगालोमेनियक' शब्द भी प्रयुक्त किया जाता है जिसे महत्वोन्मादी रोगी भी कह सकते हैं। उनके अहंकार या हेकड़ी दिखाने के लिए 'ह्यूब्रिस' शब्द भी वहाँ ज्यादा लोकप्रिय हैं। जैसे जैसे राजनीतिक दल अगले चुनावों के लिए रणनीति तैयार कर रहे है आज का परिदृश्य अनर्गल तर्को के साथ शोर से भर चुका है; शान्ति और मौन, चिन्तन व संवाद का सभ्य प्रकृति नदारद होती दीखती है।

शेष पृष्ठ 7 का

पीडीपी की हरकतें सहयोगी.....

हरकतों को कब तक बर्दाश्त करेगी। जो विचार भाजपा के प्राणतत्व हैं, क्या उनके साथ गठबंधन को स्थिर रखने के लिए खिलवाड़ बर्दाश्त करेगी। पीडीपी की राष्ट्र विरोधी हरकतों को जनता भाजपा के खाते में ही दर्ज करेगी। क्योंक़ि उसकी पीडीपी के साथ सरकार में भागीदारी है। भाजपा को यह भी ध्यान रखना होगा कि भारत की जनता का समर्थन कथित सेकुलर नीति से त्रस्त होकर राष्ट्रवादी विकल्प के लिए मिला है। इसलिए पीडीपी के नेतृत्व को यह स्पष्ट बताना होगा कि जो एजेंडा सरकार गठन के लिए तैयार हुआ है उसकी लक्ष्मण रेखा को लांघना किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं होगा।

शेष पृष्ठ 9 का

अंतर्राष्ट्रीय संतुलन की कसौटी.....

होता है.' अंतर्राष्ट्रीय राजनेताओं की बातें इतनी सरल नहीं होती हैं कि उसकी व्याख्या एक लाइन में कर दी जाएँ। ऐसे में पुतिन के योग दिवस के अवसर पर दिए इन बयानों के अर्थ निकलने की कोशिश लम्बे समय तक की जाती रहेगी। वैश्विक स्तर की राजनीति कितनी जटिल होती है, यह अपने एक साल कि कार्यकाल में नरेंद्र मोदी ने निश्चित रूप से महसूस कर लिया होगा। सवाल उभरता ही है कि क्या वैश्विक परिदृश्य में रूस जैसे बड़े और शक्तिशाली देश को अनदेखा किया जा सकता है, वह भी तब जब भारत में उसकी बेहद महत्वपूर्ण परियोजनाएं चल रही हों और वह आगे बढ़कर, वगैर प्रचार किये तमाम तकनीकि सहायता देने में संकोच न करता हो या फिर विश्व के दो बड़े ध्रुवों में संतुलन साधने में भारतीय प्रशासन से कहीं चूक हो रही है. इससे भी बड़ा, मगर सम्बंधित सवाल है क़ि क्या अमेरिकी दबाव में भारत ने रूस को अनदेखा करने की कोशिश की? योग की मूल परिभाषा ही 'संतुलन' के सिद्धांत पर टिकी है। जो 'संतुलित' है, वह योगी है। देखना दिलचस्प होगा कि विदेश नीति में दिलचस्पी रखने वाले हमारे प्रधानमंत्री अमेरिका, रूस सहित विभिन्न देशों के साथ किन योगासनों का प्रयोग करते हैं। आम जनमानस के विपरीत सरकार के लिए यह कठिन परीक्षा की स्थिति है और रूसी राष्ट्रपति ने अपनी खुली राय व्यक्त करके इसे और दिलचस्प बना दिया है। खुद अपनी पार्टी में आडवाणी जैसे वरिष्ठों का विरोध झेल रहे और देश में विपक्षी पार्टियों के निशाने पर रहे प्रधानमंत्री की अंतर्राष्ट्रीय सक्रियता अब कई देशों को भी चुभेगी, यह लगभग तय है। उम्मीद की जानी चाहिए कि हमारे प्रधानमंत्री इन सबके बीच संतुलन साधने में कामयाब रहेंगे और विवादों को काम करते हुए योग को पूरे विश्व में गुटबाजी का शिकार होने से बचाने में सफल रहेंगे। यही तो सार्थकता है, योग की, और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की भी।

दिनांक 15 जुलाई से 21 जुलाई 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अमावस्या	**16 जुलाई**	वीरवार
जगन्नाथ रथ यात्रा	**17 जुलाई**	शुक्रवार
विनायक चतुर्थी	**20 जुलाई**	सोमवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

तिरुपति बालाजी जहां समर्पण ही शक्ति है

भारत में तिरुपति मंदिर सबसे वैभवशाली मंदिरों में एक है। यह दक्षिण भारत में आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में है। तिरुपति बालाजी मंदिर विश्व भर के हिंदुओं का प्रमुख वैष्णव तीर्थ है। यह पूरी दुनिया में हिंदू धर्म का सबसे अधिक धनी मंदिर माना जाता है। सात पहाड़ों का समूह शेषचलम या वेंकटाचलम पर्वत श्रेणी की चोटी तिरुमाला पहाड़ पर तिरुपति मंदिर स्थित है। तिरुमाला पहाड़ पूरी दुनिया में दूसरी सबसे प्राचीन चट्टानें मानी जाती हैं। इसे तिरुपति बालाजी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। भगवान वेंकटेश को विष्णु का अवतार भी माना जाता है। भगवान विष्णु यहां वेंकटेश्वर, श्रीनिवास और बालाजी नाम से प्रसिद्ध हैं। हिंदू धर्मावलंबी तिरुपति बालाजी के दर्शन अपने जीवन का ऐसा महत्वपूर्ण पल मानते हैं, जो जीवन को सकारात्मक दिशा देता है। इस मंदिर की यात्रा कर श्रद्धालु स्वयं को धन्य मानते हैं। देश–विदेश के हिंदू भक्त और श्रद्धालुगण यहां आकर यथाशक्ति दान करते हैं, जो धन, हीरे, सोने–चांदी के आभूषणों के रूप में होता है। इस दान के पीछे भी प्राचीन मान्यताएं जुड़ी हैं। जिसके अनुसार भगवान से जो कुछ भी मांगा जाता है, वह कामना पूरी हो जाती है। इसलिए भक्तगण दिल खोलकर दान करते हैं। यहां पर होने वाला दान का मूल्य करोड़ों रुपयों का होता है। माना जाता है कि दान की यह परंपरा विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय द्वारा इस मंदिर में सोने–चांदी–हीरे के आभूषण का दान दिये जाने से प्रारंभ हुई थी। उसी समय से भक्तगण इस मंदिर को खूब दान देते आ रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि अनेक लोग गलत तरीकों से कमाएं धन का कुछ हिस्सा दान कर मन की शांति और संतुष्टि पाते हैं, जो वास्तव में पाप मुक्ति का ही रूप है। श्रद्धालुओं की यह आस्था है कि तिरुपति बालाजी दुःखों, कष्टों का अंत कर देते हैं।

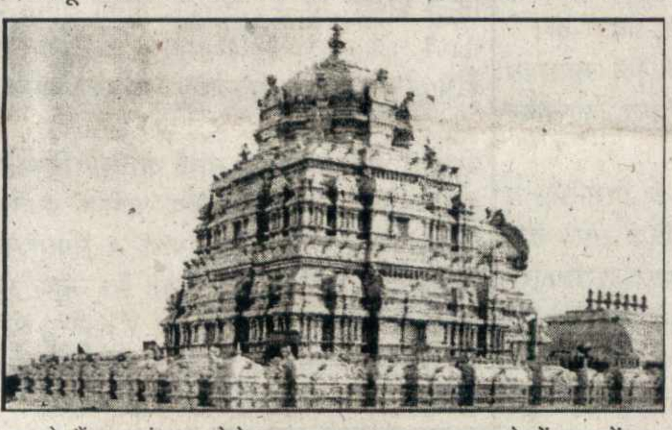

अनेक श्रद्धालु यहां आकर मनोकामनाओं को पूरा करने और सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। मनोरथ पूरा होने पर भगवान की कृपा मानकर श्रद्धा और आस्था के साथ श्रद्धालु अपने सिर के बालों को कटवाते हैं। यहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में तीर्थयात्री मुण्डन कराते हैं। यहां मंदिरों में इन कटे बालों से बहुत राजस्व मिलता है। साथ ही इनके निर्यात से विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है। मुण्डन करने वाले लोगों का स्थानीय भाषा में तमिल मोत्ताई कहा जाता है। यह एक ऐसा तीर्थ है जहां पर लाखों की संख्या में तीर्थयात्री निरतंर आते हैं। हर समय इस मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

पौराणिक महत्व– तिरुमाला तिरुपति मंदिर का हिन्दू धर्म के अनेक पुराणों में अलग–अलग महत्व बताया गया है। वाराह पुराण में वेकटाचलम या तिरुमाला को आदि वराह क्षेत्र लिखा गया है। वायु पुराण में तिरुपति क्षेत्र को भगवान विष्णु का वैकुंठ के बाद दूसरा सबसे प्रिय निवास स्थान लिखा गया है। स्कंदपुराण में वर्णन है कि तिरुपति बालाजी का ध्यान मात्र करने से व्यक्ति स्वयं के साथ उसकी अनेक पीढ़ियों का कल्याण हो जाता है और व विष्णुलोक को पाता है। इसी प्रकार भविष्यपुराण में उल्लेख है कि भगवान विष्णु को शयनकाल में महर्षि भृगु ने आकर छाती पर पैर से आघात किया। इससे माता लक्ष्मी बहुत दुःखी होकर वहां से चली गईं। तब भगवान विष्णु भी देवी लक्ष्मी के चले जाने से दुःखी होकर पापों का नाश करने वाले देवता के रूप में निवास करने लगे। ऐसी मान्यता है कि इसीलिए भगवान का नाम श्रीनिवास हुआ। पुराणों की मान्यता है कि वेंकटम पर्वत वाहन गरुड़ द्वारा भूलोक में लाया गया भगवान विष्णु का क्रीड़ास्थल है। वैंकटम पर्वत शेषाचलम कें नाम से भी जाना जाता है। शेषाचलम को शेषनाग के अवतार के रूप में देखा जाता है। इसके सात पर्वत शेषनाग के फन माने जाते हैं। वाराह पुराण के अनुसार तिरुमलाई में पवित्र पुष्करिणी नदी के तट पर भगवान विष्णु ने ही श्रीनिवास के रूप में अवतार लिया। ऐसी मान्यता है कि इस स्थान पर स्वयं ब्रह्मदेव भी रात्रि में मंदिर के पट बंद होने पर अन्य देवताओं के साथ भगवान वेंकटेश की पूजा करते हैं।

कबिरा खड़ा बजार में

तार-तार होते वादे

भ्रष्टाचार के एक कृत्य से जो कुछ भ्रष्ट होता है, वह पद है। यही इस शब्द का सच्चा अर्थ है। एक केंद्रीय मंत्री और एक मुख्यमंत्री पर अपने पदों को भ्रष्ट करने के आरोप लगे हैं। यदि दहाड़ने वाले प्रधानमंत्री उन्हें वहां बने रहने देते हैं, तो वस्तुतः वे अपना वादा तोड़ चुके होंगे। पिछले साल संपन्न हुए लोकसभा चुनाव के अभियान के दौरान भ्रष्टाचार बेहद महत्वपूर्ण मुद्दा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तब अपने चुनावी अभियान में सवा करोड़ देशवासियों से वादा किया था कि न खाऊंगा, न खाने दूंगा। यानी न तो वे व्यक्तिगत रूप से भ्रष्ट होंगे और न ही अपने आसपास के लोगों को भ्रष्ट होने देंगे। भ्रष्टाचार के संदर्भ में उनकी व्यक्तिगत निष्ठा में रंचमात्र भी संदेह नहीं है। लेकिन यह तो पहले भी सही था कि पूर्व के भी कई प्रधानमंत्री व्यक्तिगत रूप से भ्रष्ट नहीं थे। मसलन मनमोहन सिंह भी भ्रष्ट नहीं थे और उनके विरुद्ध एक न्यायिक मामला होने के बावजूद, उनके विरोधी भी यह यकीन नहीं करते कि वे ईमानदार होने के अलावा और कुछ हैं। इसी तरह अटल बिहारी वाजपेयी या इंद्र कुमार गुजराल या फिर अगर और पीछे जायें, तो पंडित जवाहर लाल नेहरू अथवा गुलजारी लाल नंदा पर भी व्यक्तिगत भ्रष्टाचार के कोई आरोप नहीं लगे। उस अर्थ में ये सभी व्यक्ति संदेह से परे थे। इसलिए नरेंद्र मोदी का न खाऊंगा का दावा सच दिखने के बाद भी उतना अर्थपूर्ण नहीं है। क्योंकि इसकी और भी मिसालें मौजूद हैं। अलबत्ता उनका न खाने दूंगा का वादा जरूर ज्यादा दिलचस्प है, इसके द्वारा वे हमसे यह कहते प्रतीत होते है कि वे दूसरों के व्यवहार नियंत्रित कर सकते हैं। इस बात के दो पहलू हैं पहला तो साफ तौर पर रोजांना के भ्रष्टाचार से संबद्ध है, यानी वह पैसा, जिसे किसी नागरिक से ड्राइविंग लाइसेंस या जमीन के अभिलेख जैसी चीजों के लिए वसूला जाता है अथवा जिसे कोई नागरिक और ज्यादा खर्चे या असुविधाओं से बचने के लिए सरकारी कर्मियों को स्वेच्छा से देता है। यह एक सांस्कृतिक स्थिति है और केवल कानून अथवा प्रशासनिक कदमों द्वारा इससे छुटकारा पाना असंभव नहीं, तो कठिन जरूर है। यहीं से हम न खाने दूंगा के दूसरे पहलू पर आते हैं। हम यह मान लें कि नरेंद्र मोदी का यह मतलब था कि वे अपने मंत्रियों को भ्रष्ट नहीं होने देंगे। यह कहना उचित होगा कि उनके पूर्व के कई प्रधानमंत्री इस मामले में विफल हुए हैं। निश्चित रूप से अपने मंत्रिमंडल के कई सारे लोगों के कार्यकलाप पर मनमोहन सिंह का कोई नियंत्रण नहीं था और यहां तक कि वाजपेयी को भी इस मामले में संघर्ष करना पड़ा था। इन दोनों मामलों में परिस्थितियां नरेंद्र मोदी से भिन्न थीं, क्योंकि उन दोनों की अल्पमत सरकारें थीं और वे अपने घटकों को अनुशासित नहीं रख सकते थे। तो किसी मंत्री के भ्रष्टाचार अथवा उसके आरोप के सामने आने पर नरेंद्र मोदी क्या करेंगें।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 08 जुलाई से 14 जुलाई 2015 तक

प्राप्तेषु

आर्य प्रतिनिधि सभा,
15–हनुमान रोड,
नई दिल्ली–01

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा ... स्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।